4-79

प्रेम पत्र

प्यारे मित्र श्री राजनारायण जी महाराज,

सादर प्रणाम।

अब तो आपको स्वास्[illegible] छोड़े हुये बहुत दिन हो गये इसलिये आपकी सेहत ठीक रहती होगी [illegible]जन बढ़ रहा होगा। यह बात ठीक है कि श्री चरण सिंह की राजनीतिक सेहत बिगड़ते देखकर आपको बहुत दुःख होता है। और यह स्वभाविक ही है कि जिस चीज से आपको दुःख हो, दीवाना होने के नाते, मुझे भी दुःख होता है।

आपने मोरार जी भाई का साथ छोड़ा तो चरणसिंह जी ने भी आपका साथ छोड़ दिया। दूसरी तरफ शान्ता कुमार जी आपसे नमस्ते करते घबराते हैं। तीसरी तरफ जयप्रकाश नारायण जी, नारायण होने के बावजूद, आपकी बोली समझ नहीं पाते हैं। मोरार जी भाई का कहना है कि वे इन्दिरा गांधी को प्रधान मंत्री तो क्या विपक्ष का नेता भी नहीं बनने देंगे। अगर हो सका तो लोक-सभा का सदस्य भी नहीं बनने देंगे। यदि इसके लिए आय-कर विभाग से इन्दिरा जी के फार्म पर छापा डालने से कुछ मिले तो वह भी करेंगे। कुछ लोगों का यह कहना है कि यह छापा इन्दिरा गांधी के कुछ लोगों ने ही इन्दिरा गांधी के फार्म पर डलवाया ताकि जनता पार्टी बदनाम हो जाये। इतना पहाड़ खोदने के बाद भी क्योंकि वहाँ से चूहा भी नहीं मिला इसलिये मोरार जी भाई ने सोचा कि वित्त मंत्री चरणसिंह जी को बना दिया जाये और इस उधेड़ बुन में अगर आपका पत्ता सरकार से साफ कर दिया जाये तो सबसे अच्छी बात होगी।

इसलिये आपकी सेवा में सुझाव रखना चाहता हूँ। यदि आप इस देश का कल्याण चाहते हैं तो प्रधान मंत्री को हटाने के लिये उनके निवास स्थान पर सत्याग्रह शुरु कर दें।

आपका

[illegible]



मुख पृष्ठ पर

अगर कहीं मैं बर्मन होता
तो क्या होता तो क्या होता?
रोज निराली धुनें बनाता,
भों भों, भों भों तक धई ता ता।
रोज नये कांट्रेक्ट लेकर
अपनी धुनें तुमको सुनाता,
नये नये गायकों के संग
अपनी जोड़ी को चमकाता।



दीवाना

अंक : ४, २५ जनवरी से ३१ जनवरी १९७९ तक
वर्ष : १५

सम्पादक: विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका: मंजुल गुप्ता
उपसम्पादक: कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-बं, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दें
छमाही: २५ रु०
वार्षिक: ४८ रु०
द्विवार्षिक: ९५ रु०

लेखकों से

निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद, मौलिक एवं अप्रकाशित लघु कथायें लिखकर भेजें। हर प्रकाशित कथा पर 15 रु० प्रति पेज पारिश्रमिक दिया जायेगा। रचना के साथ स्वीकृति अस्वीकृति की सूचना के लिए पर्याप्त डाक टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा संलग्न करना न भूलें। —सं०

काका के कारतूस

प्रश्न 'दीवाना' के दीवानों के उत्तर काका हाथरसी के



सुभाष चन्द्र दीक्षित, भोपाल

प्र० : काकाजी आपकी अन्तिम इच्छा क्या है ?

उ० : ऐसा प्रश्न पूछते 'मिस्टर,' शर्म क्यों नहीं आती है,
अन्तिम इच्छा, फाँसी के कैदी से पूछी जाती है ।

इन्द्र कुमार नाइवानी, बिलासपुर

प्र० : यह दुनिया है गम का सागर, फिर क्यों भरते इसमें गागर ?

उ० : बेगम के गम में गाफिल हैं, नई उमर के मजनूं नकली,
सोच रहे आ जाए गागर में कोई लैला सी मछली ।

किशोर नारंग, इन्दौर (म० प्र०)

प्र० : कोई आदमी मुसीबतों को कब दावत देता है ?

उ० : डेढ़ वर्ष को शनिश्चर, जिसके सिर छा जाय,
बिना बुलाए मुसीबत, उसके घर आ जाय ।

दिनेश मटाई 'राजा,' इन्दौर

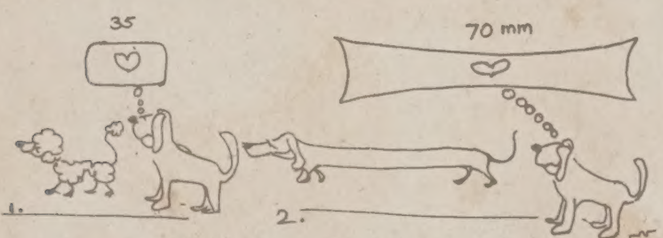
प्र० : पाप कब तक जिन्दा रहता है ?

उ० : दुष्कर्मों की जब तलक, रहे हृदय पर छाप,
तब तक उसके वास्ते, जिन्दा रहता पाप ।

अमरचन्द मोदक, धनबाद

प्र० : मुझको रात में बहुत डर लगता है, कोई ताबीज बनाकर भेजिए ?

उ० : डरको, तुमसे डर लगे, ऐसा दें ताबीज,
इसके बदले तुम हमें, भेजोगे क्या चीज ?



विनेश कुमार श्रीवास्तव 'राही', नागपुर

प्र० : तनहाई अच्छी नहीं लगती, क्या करें काका ?

उ० : शादी अपनी शीघ्र ही, करलो आप हुजूर,
पाओ जीवन संगिनी, तनहाई हो दूर ।

चन्द्रभान 'अनाड़ी', जबलपुर

प्र० : हमारी काकी जी के बेलन का 'टेम्प्रेचर' कितना रहता है ?

उ० : बिन पूछे घर में घुसे, उनसे आँख लड़ाय
'टेम्परेचर' का पता, उसको झट लग जाय ।

पुष्कर राव आयड़, उदयपुर

प्र० : दिल ही टूट गया, जीकर क्या करेंगे जब फूट गई बो[तल] पीकर के क्या करेंगे ?

उ० : जब तक मुरारजी हैं, उम्मीद छोड़ दीजे,
बोतल जो बच रही हैं, उनको भी फोड़ दीजे ।

अशोक बेदी, जोधपुर

प्र० : इमरजेन्सी के दौरान, प्रत्येक नारो अपने आप को इं[दिरा] गांधी क्यों समझती थी ?

उ० : इन्दिरा गांधी के टाइम में, इमरजेन्सी सच्ची थी,
एक अलीगढ़ वाला बोला, कर्फ्यू से वह अच्छी थी ।

मनोज भगत 'मजबूर', भोजपुर

प्र० : काका जी आप हमेशा मुस्कराते क्यों रहते हैं ?

उ० : या तो दीवाना हँसे, या मेहरबाँ जिस पर खुदा,
वरना इस दुनियाँ में रहकर मुस्करा सकता है कौन ?

राधेश, सुधीर मार्केट, मोगामंडी

प्र० : किसको किसकी इच्छा रहती है, काका जी ?

उ० : नेता को कुर्सी की, पंडित को तुलसी की,
प्लेयर को फुर्ती की, बच्चे को कुलफी की ।
काका को दाढ़ी की, काकी को साड़ी की,
जीजा को साली की, अफसर को डाली की ।

टिकाराम गिरि 'राजू,' दुलियाजान (आसाम)

प्र० : अधिक हँसने पर आँखों में आंसू क्यों आ जाते हैं ?

उ० : खोटा दिल भी हास्य से, तुरंत खरा हो जाय,
दुख का पानी निकल कर, हृदय हरा हो जाय ।

कमल कुमार भाटिया, बरेली

प्र० : कुछ पति अपनी पत्नी के गुलाम होते हैं, लेकिन आप

उ० : राधा जी के कृष्ण थे, सीता जी के राम,
काकी जी के इसलिए, काका बने गुलाम ।

जोग [मो]हन, सासाराम (बिहार)

प्र० : [का]लेज हमारा है बहुत दूर, रोज जाना पड़ता है क्या हुजूर ?

उ० : कष्ट सहन क्यों कर रहे, काहे जिय घबराय,
कह दीजे कालेज से, मेरे घर आ जाय ।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें ।	**काका के कारतूस** दीवाना साप्ताहिक, ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग नई दिल्ली-११०००२



भगवान का केन्द्रीय सचिवालय

हम सरकारी दफ्तरों को विभिन्न प्रकार के पत्र लिखते हैं. और उनके पत्रों के उत्तर पाते हैं। अगर भगवान को की जाने वाली प्रार्थना भी उसी प्रकार भगवान के दफ्तर को पत्रों व फार्मों द्वारा भेजी जाने लगे तो यह पत्रव्यवहार कैसा होगा उसी की कल्पना इस फीचर में की जाती है। पढ़िये और पत्रव्यवहार का आनन्द उठाइये

सेवा में,
कृपानिधान भगवान,
स्वर्ग.

हे सर्वशक्तिमान,

मुझे विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि अब स्वर्ग में 28% जगहें पिछड़े वर्गों के भक्तों के लिये सुरक्षित की जा रही हैं। क्या यह सूचना सही है? कृपया उत्तर दें।

आपका सेवक
ज्ञानप्रकाश कुर्मी
जेपी. बाज़ार
पटना

14/12/78

केन्द्रीय ॐ सचिवालय
ब्रह्मांड संचालक सर्वशक्ति मान भगवान
मोक्ष मार्ग, स्वर्ग. (पिन. १०००८)

क्रमांक — — — — — — — तिथि 1•1•79.

विषय- पिछड़े वर्गों के लिये सुरक्षित जगहें

महोदय,

आप यह जान कर प्रसन्न होंगे कि भगवान जी के कैबिनेट में शंकर व ब्रह्मा जी के सिफारिश पर इसी आशय का प्रस्ताव विचाराधीन है। कैबिनेट द्वारा फैसला होते ही आरक्षण का नियम लागू हो जायेगा। भगवान पिछड़े वर्गों की भलाई के लिये कृत संकल्प हैं।

शुभेच्छा सहित।

आपका
मंदाकणफांटू
निजि सचिव
भगवान

सेवा में,
सर्वशक्तिमान भगवान
केन्द्रीय सचिवालय,
मोक्ष मार्ग, स्वर्ग.

हे अन्नदाता,

कहते हैं कि दाने दाने पर खाने वाले का नाम लिखा होता है। 23 दिसम्बर और 25 दिसम्बर 1978 को मरता रहा मुझे खाना नहीं मिला उस दिन की मेरे नाम के मोहर वाले दाने कहाँ गये?

मुझे इस बात का जवाब दिया जाये।

भवदीय
मंगतूराम भिखारी
कनाट प्लेस
नई दिल्ली

26/12/78

केन्द्रीय ॐ सचिवालय
ब्रह्मांड संचालक सर्वशक्ति मान भगवान
मोक्ष मार्ग, स्वर्ग. (पिन. १०००८)

क्रमांक — — — — — — — तिथि — — — — —

28-12-78

विषय - दाने दाने पर मोहर

महोदय,

हमें खेद है कि आपको भूखा रहना पड़ा। आपको यह जान कर खुशी होगी कि हम शीघ्र ही देवताओं की एक उच्च विशेषाधिकार प्राप्त जांच कमेटी बना रहे हैं जो यह खोज करेगी कि आपके नाम के दाने कहां हैं।

जैसे ही कमेटी रिपोर्ट देगी फौरन उचित कार्यवाही की जायेगी।

आपका
हस्ताक्षर.
इन्द्रदेव
अध्यक्ष दाना पानी विभाग

सेवा में,
भगवान जी
मोक्ष मार्ग,
स्वर्ग।

हे दयालु,

मैं हर वर्ष सत्यनारायण की कथा करवाता हूं। मुझे विश्वस्त सूत्रों से पता लगा है कि इस कथा के करवाने वालों के लिये स्वर्ग में जगह सुरक्षित हो जाती है।

कृपया मुझे यह बताया जाये कि मुझे किस टाइप का और कौन से नम्बर का फ्लैट एलाट किया गया है?

आपका आभारी हूंगा।
भवदीय
13/12/78. संत राम सेवक
रोहतक

केन्द्रीय सचिवालय

ब्रह्मांड संचालक सर्वशक्ति मान भगवान
मोक्ष मार्ग, स्वर्ग. (पिन. १०००८)

क्रमांक -------- दिनांक 19.12.78

विषय - फ्लैट एलाटमेन्ट

महोदय,

आपको सूचित किया जाता है कि फ्लैट की संख्या से अधिक प्रत्याशियों के होने के कारण स्वर्गीय शासन ने लाटरी द्वारा फ्लैट [illegible] एलाट करने का फैसला किया है। लाटरी में भाग लेने के लिये आप फर्स्ट क्लास मन्दिर के पुजारी द्वारा एटेस्ट किया एप्लीकेशन फार्म भर कर भेजें। लाटरी का परिणाम जानने के लिये अपना ऐड्रेस लिखा तथा टिकट लगा लिफाफा भेजिये।

आपका
हस्ताक्षर
अध्यक्ष स्वर्ग
डिवेलपमेंट अथार्टी

भगवान जी अंकल,

मैं 6 वर्ष की लड़की हू मम्मी कहती है कि आप सब जगे हैं और सब कुछ देकते हैं लेकिन किही को दिकाई नहीं देते। आप किसी के शामने क्यो नहीं आते? मुझे सब पता है आप के चेहरे पर चेचक के दाग होंगे इसीलीये आप सामने आते सरमाते हैं।

मेरी टीचर कल बता रही थीं कि दिल्ली में कई हास्पीटल हैं जहा पलास्टीक सर्जरी से चेहरे के दाग वगैरा मिटाये जा सकते हैं। आप चुपचाप मुझे बता देंना मै डैडी से पूछ उन सारे हासपीटिलों का पता आप को बताऊंगी।

आपकी
पम्मी.

केन्द्रीय सचिवालय

ब्रह्मांड संचालक सर्वशक्ति मान भगवान
मोक्ष मार्ग, स्वर्ग. (पिन. १०००८)

क्रमांक -------- दिनांक 3-1-79

विषय - प्लास्टिक सर्जरी.

प्रिय पम्मी,

मुझे तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हें यह गलत फहमी हुयी है कि मै चेचक के दागों के कारण सामने नही आता। सच यह है कि काम की अधिकता के कारण मुझे दर्शन वगैरह देने की फुर्सत नहीं मिलती। सारे ब्रह्मांड की फायलें निबटाने में सारा समय लग जाता है।

शुभ चिन्तन के लिये धन्यवाद।

तुम्हारा
हस्ताक्षर लक्ष्मी
प्राइवेट सेक्रेटरी
(फार भगवान)

सेवा में,
सर्वशक्तिमान भगवान,
केन्द्रीय सचिवालय,
मोक्ष मार्ग, स्वर्ग.

हे दयालु,

मेरी प्रार्थना है कि मेरी शादी को आठ वर्ष हो गये परन्तु मेरी कोख सूनी है! मैंने पुत्राकांक्षा से सारे तीर्थों की यात्रा की, सारी मनौतियां मानीं लेकिन फल नहीं मिला।

मेरी सूनी कोख शीघ्रातिशीघ्र भर दी जाये।

धन्यवाद।
प्रार्थिनी,
कौशल्या देवी,
230 रामाकृष्णापुरम
नई दिल्ली

12/2/78.

केन्द्रीय ॐ सचिवालय

ब्रह्मांड संचालक सर्वशक्ति मान भगवान
मोक्ष मार्ग, स्वर्ग. (पिन. १०००८)

क्रमांक — — — — — — —   तिथि 19•2•78

विषय - सूनी कोख

महोदय,

आपका दिनांक 12/2/78 का लिखा पत्र मिला हम आपकी प्रार्थना पर विचार करने मे असमर्थ हैं क्योंकि आपकी अर्जी के साथ एम • बी• बी• एस• डाक्टर का कोख सूनी होने का सर्टीफिकेट संलग्न नहीं है। आप सर्टीफिकेट के साथ दोबारा प्रार्थना पत्र भेजिये।

धन्यवाद।

आपका

हस्ताक्षर,
प्रथम सचिव

सेवा में,
सर्वशक्तिमान भगवान
केन्द्रीय सचिवालय,
मोक्ष मार्ग, स्वर्ग.

ओ गॉड,

मैं B.A. फाइनल की परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिये परीक्षा के दिनों लगातार एक महीने सुबह-सुबह मन्दिर जाकर मत्था टेक आता था लेकिन परीक्षा फल में मेरा रोल नम्बर नदारद है। मुझे मत्था टेकने का फल क्यों नहीं दिया गया? यह अन्याय क्यों?

उत्तर की प्रतीक्षा में
प्रार्थी
बनवारी लाल 'सुमन'
स्टूडेंट, बी.ए. आनर्स
रामजस कॉलिज

11/11/78.

केन्द्रीय ॐ सचिवालय

ब्रह्मांड संचालक सर्वशक्ति मान भगवान
मोक्ष मार्ग, स्वर्ग. (पिन. १०००८)

क्रमांक — — — — — — —   तिथि 11•12•78

विषय - बी•ए• परीक्षाफल

महोदय,

आपका दिनांक 11/11/78 का पत्र मिला आपके पत्र से सम्बन्धित फायल का अध्ययन किया गया है। आपके मत्था टेक वाले रिकार्ड कार्ड पर सर्वशक्तिमान भगवान के निजि गुप्तचर सेवा विभाग ने टिप्पणी की है कि मन्दिर में आप मत्था टेकने से ज्यादा मन्दिर आई सुन्दर कन्याओं से आंखें लड़ाने में ध्यान देते रहे थे। इसी लिये आपके क्लेम को झूठा माना गया है।

आपका

हस्ताक्षर
रिकार्ड सुपरवाइजर
केन्द्रीय सचिवालय

सेवा में,

भगवान जी.

स्वर्ग 10008.

धन्य हो,

मैं एक 29 वर्ष की कुआंरी कन्या हूं। ज्योतिषी ने मेरे हाथ की रेखायें देख कर बताया था 20 वर्ष की आयु में मेरी शादी होगी। नौ वर्ष उस नियत तिथि को गुजर गये। अब तक मेरी शादी नहीं हुयी।

क्या मुझे आपका दफ्तर इस गड़बड़ी का संतोषजनक उत्तर दे सकता है?

शीघ्र उत्तर के लिये आभारी हूंगी

आपकी,
नैना देवी
सदर बाजार
अम्बाला।

1.12.78

केन्द्रीय ॐ सचिवालय

ब्रह्मांड संचालक सर्वशक्ति मान भगवान
मोक्ष मार्ग, स्वर्ग. (पिन. १०००८)

क्रमांक ——————— दिनांक 11.12.78

विषय - शादी की रेखा

महोदय,

यह पत्र आपके पत्र दिनांक 1.12.78 के जवाब में है। हम खेद के साथ सूचित कर रहे हैं कि जिस देवता के पास आपकी सेवाओं का रिकार्ड है वह तीन महीने से मैडिकल लीव पर गये हुये हैं। जब वह लौट आयेंगे तो रिकार्ड की जांच पड़ताल कर आपको सूचना दी जायेगी।

आपका,
हस्ताक्षर
इंचार्ज, रिकार्ड सेक्शन

दीवाना तेज कार्यालय,
बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली.

2.1.79

सेवा में -
भगवान
केन्द्रीय सचिवालय, स्वर्ग 10008.

प्रिय महोदय,

दीवाना पत्रिका से तो आप परिचित ही होंगे। हम आप पर एक फीचर छापना चाहते हैं तथा दीवाना के बैक कवर के अन्दर वाले पृष्ठ पर (जहाँ फिल्म स्टारों की फोटो छपती हैं) आपका फोटो भी छापना चाहेंगे। इन्टरव्यू तथा फोटो के लिये हमारे पत्रकार पोपट लाल तथा फोटोग्राफर ज्ञानचन्द को स्वर्ग के पास ईशू कीजिये तथा भगवान जी की सुविधानुसार एपाइंटमेन्ट का समय निर्धारित करें।

हम आपके आभारी होंगे। आपका सेवक
हस्ताक्षर
सम्पादक दीवाना

केन्द्रीय ॐ सचिवालय

ब्रह्मांड संचालक सर्वशक्ति मान भगवान
मोक्ष मार्ग, स्वर्ग. (पिन. १०००८)

क्रमांक — 442 / / 778 तिथि — 3.1.79

विषय - अनुसार आपके पत्र नं० / 727/ 420 दिनांक 2.1.79

प्रिय महोदय,

आपको सूचित किया जाता है कि भगवान जी फोटो नहीं खिंचवाते तथा किसी पत्रकार को इंटरव्यू नहीं देते। धरती के जीवित प्राणियों को स्वर्गलोक के पास ईशू करने का भी नियम नहीं है।

आपका, हस्ताक्षर
प्रथम निजि सचिव
भगवान

नोट - आपने अपने पत्र के साथ दीवाना की जो प्रति भेजी थी वह हम लौटाने में असमर्थ हैं आपके उस अंक में शिव जी को नंदी बैल के सींग स्कूटर की तरह पकड़ कर सवारी करते दिखाया गया था शिव जी ने देखा तो आग बबूला हो गये और अपना तीसरा नेत्र खोल दीवाना को भस्म कर डाला और अपने गणों को उसने भाडे माजने के लिये दे दिया।

खेद सहित।

हस्ताक्षर

परोपकारी



बात-बे-बात की



नया धारावाहिक उपन्यास (भाग-८)

सुबह का तारा

लेखक—संगीता

पूर्व कथा

सुशील इस दुनिया में अकेला था. अपना कहने के लिये इस भरी दुनिया में उसका कोई न था। वह स्कूल में पढ़ता था और मुश्किल से अपना गुजारा चलाता था। मार्च का महीना, परीक्षा का निकटतम समय था, सभी लड़के जी तोड़ मेहनत कर रहे थे। सुशील भी उनमें से एक था परन्तु कई दिनों से भूख से व्याकुल। एक दिन वह कक्षा से बाहर निकल आया, बाहर आकर उसे चक्कर आया और धड़ाम से फर्श पर गिर पड़ा। सारे स्कूल के बच्चे वहां इकट्ठे हो गये। उन्हीं में एक रंजन था जो अच्छे धनाढ्य परिवार से संबंधित था। रंजन उसे अपनी कार में अस्पताल ले गया जहां डाक्टर ने बताया कि इसने कई दिन से खाना नहीं खाया है इसलिये इसकी ऐसी हालत हुई है। रंजन सुशील को अपने घर ले आया और अपना पक्का दोस्त बना लिया। दोनों साथ-साथ पढ़ते और बड़े होते रहे। सुशील ने अपने खर्चे के लिये एक ट्यूशन भी कर ली। वहीं पर उसकी मुलाकात मधु नाम की लड़की से हुई और मन-ही-मन दोनों एक एक दूसरे को प्यार करने लगे।बी. ए. तक की पढ़ाई समाप्त करके सुशील ने वकालत करने की सोची तो रंजन ने उसे शहर भेज दिया। वहीं पर रंजन की बहन सीमा शिक्षा प्राप्त कर रही थी जो बिल्कुल ही आधुनिक विचारों की थी। सीमा ने सुशील को आधुनिक बनाने और अपने जाल में फंसाने की भरसक कोशिश की और सुशील एक रात धोखा खा गया। दूसरी रात भी सीमा ने सुशील के कमरे में एक लड़की को भेजा लेकिन सुशील ने उसके साथ क्या व्यवहार किया···आगे पढ़िये।

रात के नौ बजे होंगे। दरवाजा धीरे से खुला और दरवाजे में उसी लड़की का चेहरा दिखाई दिया जो पिछली रात उसके साथ थी।

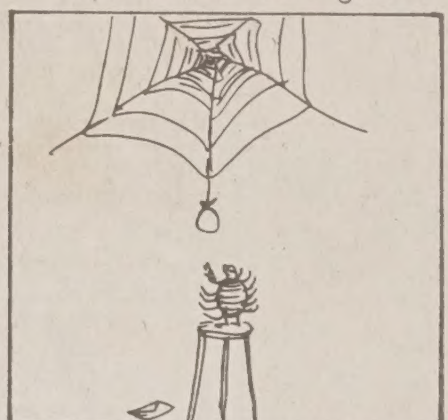
न तो वह स्वागत के लिए ही उठा और न उसने एक बार नजरें उठा कर देखने के बाद दूसरी बार नजर उठाई। सरसरी तौर पर बोला—

'आज मैं नशे में नहीं हूँ।'

'मैं बोतल लाई हूँ।'

'तुम खुद बोतल हो।' वह हंस कर बोला।

लड़की अन्दर आ गयी। सुशील के



पलंग के पास भर्राए स्वर में बोली—

'मैं कसम खाकर कहती हूं कि तुमसे अधिक प्यारा मुझे आज तक कोई नहीं लगा।'

'धन्यवाद!'

'बड़े बेरहम हो—मेरी ओर देखते तक नहीं।' वह तुनक कर बोली।

'बहुत ज्यादा डार्लिंग!' सुशील हंसकर बोला, 'अब तुम जाओ। तुम्हारा हसबैंड तुम्हारी राह देख रहा होगा।'

'वह गधा है!' लड़की ने कहा और सुशील के ऊपर झुक गई।

'इससे पहले कि मैं तुमको उठा कर बाहर फेंक दूं, यहां से चली जाओ।' सुशील ने नर्मी से कहा।

'आखिर आज इन्कार क्यों है?'

'हमेशा था और रहेगा—कल तो मैं नशे में था।'

'आज फिर हो जाओ।'

'आदमी एक ही बार धोखा खाता है।'

वह कुछ देर खड़ी रही। फिर पैर पटकती हुई चली गई।

सुशील इत्मीनान से बैठा पढ़ता रहा।

पन्द्रह मिनट बीते होंगे कि सीमा अन्दर आई।

सुशील ने किताब उठा कर मेज पर रख दी और बोला, 'आओ सीमा! तुम सुबह चली क्यों गई थीं?'

सीमा कुछ बोली नहीं। उसके होंठों पर मुस्कान थी। रहस्यपूर्ण मुस्कान। आज उसने कपड़े भी ऐसे ही पहन रखे थे।

'आओ बैठो!' सुशील ने कहा।

'आज मैं फिर आपके पास सोऊंगी।'

'जरूर!' सुशील बोला, 'तुम्हें नींद लगी हो तो सो जाओ। मैं अभी थोड़ी देर और पढ़ूंगा।'

'दरवाजा बन्द कर दूं?'

'तुम लेटो। मैं बन्द किये देता हूँ।' सुशील बोला और उठ कर दरवाजा बन्द कर दिया। फिर बैठ कर पढ़ने लगा।

सीमा लेट गई थी। उसने आँखें मूंद ली थीं। आज भी उसने खूब पी रखी थी। लेकिन कल से कुछ कम। सुशील की पीठ उसी की ओर थी। उसने अपना हाथ सुशील की कमर में डाल रखा था। अचानक उसने गुदगुदाया। सुशील कहकहा लगा कर हंसते हुए बोला—

'शरारत मत करो। सो जाओ। कल हम दोनों लड़ेंगे। देखूंगा तुम मुझसे जीत पाती हो या नहीं।'

'अभी वह आयी थी···मैं देख रही थी।' सीमा बोली, 'तुमने क्यों भगा दिया?'

'मुझे खाने का शौक है। लेकिन यह जरूरी नहीं कि मुर्गा खाऊँ या कुत्ते का शोरबा!'

सीमा कुछ देर चुपचाप लेटी रही। फिर उठी और सुशील की आंखों में आँखें डालकर बोली—

'आप मुझे कल से बोर कर रहे हैं।'

'नहीं तो।'

'याद कीजिए, आज रात को आपको अब मेरे साथ सोना होगा।'

शेष पृष्ठ १० पर

बन्द करो बकवास


आजा सनम, मधुर चांदनी में हम तुम मिले तो वीराने में भी आ जाएगी बहार।
बन्द करो बकवास, वीराने में बहार आये न आये, हम दोनों को निमोनिया जरूर हो जाएगा। इस सर्दी में घूमने तुम अकेले ही जाओ।
यह समां-समां है यह प्यार का, किसी के इन्तजार का दिल ना चुराले कहीं मेरा मौसम बहार का।
वन्द करो बकवास और ले आओ वोतल आम के आचार की। कितनी वार कहा है सुबह-सुबह शायरी शुरू मत करो। रोज दफ्तर जाने में देरी हो जाती है।
मैंने शायद तुम्हें पहले भी कहीं देखा है।
वन्द करो बकवास, मैं जानती हूँ कि शादी के वाद जरा मोटी हो गई हूं रोज-रोज चिढ़ाते क्यों हो।
THE NATIVE

पृष्ठ १० से आगे

'तो क्या तुम यह समझती हो कि मैं फर्श पर सोऊँगा। हम इसी पलंग पर सोयेंगे।'

'मुझे भी आज रात देखना है !' सीमा बोली और उसने करवट बदल कर आँखें मूंद लीं।

सुशील काफी रात बीतने तक पढ़ता रहा। फिर बिजली बुझाकर लेट गया।

मधु की याद के चिराग जल उठे। वह मधु के बारे में सोचते-सोचते सो गया।

सुशील सुबह जागा तो कमरे में धूप भर गई थी। उसने अंगडाई लेकर कनखियों से देखा। सीमा ने स्टोव जला लिया था। स्टोव पर केतली में चाय का पानी खौल रहा था। उसने साड़ी के ऊपर तौलिया लपेट रखा था।

सुशील उठा और सीमा की ओर देखते



हुए बोला—

'भई वाह, आज तो मजा आ गया।'

'नाश्ता भी तैयार है।' सीमा ने सिर झुकाए हुए कहा।

सीमा ने डबल रोटी और मक्खन ले लिया था। टोस्ट सेक लिये थे।

'तुमने तो कमाल कर दिया। दो मिनट में आया। कहो तो नहा भी लूँ?'

'हाँ, हाँ, नहा लीजिए !'

सुशील बाथरूम में चला गया।

नहा-धोकर निकाला तो सीमा नाश्ता ले आई। दोनों नाश्ता करने लगे। सीमा की आँखें डबडबायी हुई थीं। होंठ काँप रहे थे। वह दोनों हाथ जोड़कर बोली—

'मुझे क्षमा कर दीजिए।' मैं बहुत ही गन्दी और नीच हूँ।'

'गंदी नहीं, बेवकूफ !' सुशील हँसने लगा।

'मुझे क्षमा कर दीजिए।' सीमा बोली। उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे। 'मैंने आपके लिए बहुत बुरी-बुरी बातें सोचीं। आपको धोखा देकर शराब पिलाई। उस औरत के साथ...!'

'सुनो सीमा !' सुशील ने गंभीरता से कहा, 'भविष्य में फिर कभी मुझे इन बातों की याद न दिलाना वरना बड़ी मरम्मत करूँगा। तुम भी भूल जाओ। मुझे तो कुछ याद भी नहीं है। यह न सोचना कि मैं तुम्हें इसलिए बहिन कहता हूँ कि तुम रंजन की बहिन हो। यह सब बकवास है। बल्कि इसलिए कि मेरी निगाह में तुम्हारे लिए बहिन जैसा प्यार है।'

उसने सीमा के दोनों हाथ अलग-अलग करके उसे अपनी ओर खींचकर अपने सीने से लगा लिया और उसके बालों में हाथ फेरते हुए रुक-रुक कर बोला—

'मैंने तुम्हें अब तक किसी बात के लिए मना नहीं किया। लेकिन आज कर रहा हूँ। तुमने अपनी जिन्दगी का जो रास्ता चुना है, वह गलत है। इसे छोड़ दो। मैंने किशोर से बात कर ली है। तुम्हारे बारे में उसे कुछ नहीं मालूम होना चाहिए। तुम कल मेरे साथ घर चलोगी और वहीं तुम्हारी शादी होगी। इसके बाद तुम अपने दोस्तों से नहीं मिल सकोगी। क्या समझीं? अरे हां! आज तो रविवार है। मुझे किशोर के पास जाना है।'

सीमा खामोश बैठी रही। जैसे उसे सुशील की हर बात मंजूर हो। उसके दिल से बहुत बड़ा बोझ उतर गया हो।

उसी दिन सीमा होस्टल से अपना सामान उठा लाई। उस समय सुशील अपने कमरे में न था। वह शायद किशोर के यहां गया हुआ था। शाम को जब वह वापस आया तो उसका चेहरा प्रसन्नता से चमक रहा था। सीमा का सामान देखकर उसे आश्चर्य नहीं हुआ बल्कि उसे ऐसा लगा जैसे उसे इसका विश्वास था।

उसने आते ही सीमा से कहा—

'अगर तुम मेरा कहना मानो तो हम सवेरे ही घर चलें !'

सीमा ने उसकी ओर देखा लेकिन चुप रही।

'बताओ न सीमा !'

'आज से आप मेरे मार्ग-दर्शक हैं।' सीमा बोली, 'आप जो कहेंगे, मैं वही करूंगी, सुशील भाई। बल्कि कोशिश करूंगी कि आपको कुछ कहना ही न पड़े।'

'मुझे यही आशा थी।' सुशील बोला, 'मैं सोचता हुआ आया था कि होस्टल से तुम्हारा सामान मंगवा लूंगा। और यह भी निश्चय कर लिया था कि अब इस कमरे में मैं नहीं रहूंगा। अच्छा हुआ तुम खुद ही सामान उठा लायीं।'

घर जाने की खुशी में रात जागते हुए ही बीत गयी। सीमा को तो कुछ देर नींद आ गयी थी लेकिन सुशील की तो पलक झुक ही नहीं पाई थीं। उसकी आँखों के आगे वह रात नाच रही थी जिस रात मधु से बिदा हुआ था। मधु कैसी होगी? कितनी खुश होगी? किस तरह मिलेगी? एक विचित्र-सी बेचैनी थी जो रह-रह कर दिल में पैदा हो रही थी।

सुबह सारा सामान लाद कर वे बस स्टैण्ड पहुंच गये और नौ बजे घर पहुंच गये। सीमा और सामान को घर छोड़ कर वह मधु के घर की ओर चल पड़ा।

रंजन घर में नहीं था। मालूम हुआ कि थोड़ी देर पहले ही कार से कहीं गया है। सुशील सबसे पहले रंजन से ही मिलना चाहता था, लेकिन किसी को यह मालूम न था कि वह कब लौटेगा। इसलिए वह मधु के घर की ओर चल पड़ा।

जब मधु के घर पहुंचा तो उसने मधु के घर के दरवाजे पर रंजन की कार खड़ी देखी। एक मुस्कराहट उसके होंठों पर दौड़ गयी।

दबे पाँव घर में कदम रखा। मधु की माता जी रसोई घर में थीं। पिताजी घर में नहीं थे। उस कमरे से, जहाँ वह मधु को पढ़ाता था, रंजन और मधु के बात करने की आवाजें आ रही थीं।

दरवाजे के पास पहुंच कर उसके कदम रुक गये। उसने अपना नाम सुन लिया था। रंजन कह रहा था—

'सुशील की काफी दिनों से कोई चिट्ठी नहीं आयी। सोच रहा हूं शहर हो आऊं।'

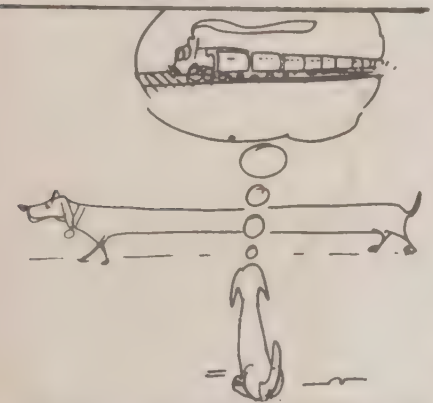
'पता नहीं क्या बात है ?'

'पांच महीने में एक चिट्ठी। मास्टर साहब बड़े बेमुरव्वत हैं।'

'ऐसा नहीं है !' रंजन ने कहा, 'सुशील सभी को प्यार करता है। कोई ऐसी बात जरूर है जिसकी वजह से वह मुझे चिट्ठी न लिख सका।'

'मैं तो यह समझती थी कि वह हर हफ्ते आया करेंगे।'

'मैं भी यही समझता था।' रंजन ने कहा, 'शायद तुम्हें बुरा लगे लेकिन सच्ची



बात कहूंगा। तुम्हारी वजह से नहीं मुझे अपनी वजह से विश्वास था कि सुशील आयेगा। वह मुझे बहुत चाहता है मधु ! मेरा विचार है कि मुझे संसार में इतना और कोई नहीं चाहता।'

सुशील का दिल भर आया। उसे ऐसा लगा कि अगर वह थोड़ी देर और खड़ा रहा तो आँसू रोकना कठिन हो जायेगा। वह जल्दी से कमरे में चला गया।

'आ गया ! भई आ गया !' रंजन के मुंह से एकदम निकला और दोनों हाथ फैला कर सुशील की ओर दौड़ा और उसे लिपटा लिया। वह बड़बड़ाता जा रहा था, 'अरे भई कहाँ रह गये थे। न मेरी चिट्ठी का जवाब दिया, न आये ?'

इससे पहले कि सुशील कुछ कहता, रंजन फिर बोला—

'मैं...बस पांच मिनट में आया क्योंकि कार में रुपयों का बैग भूल आया हूं।'

यह कह कर रंजन तेजी से बाहर निकल आया।

'अरे ! मैं ले आता हूं।' सुशील ने कहा।

'नहीं, तुम्हें नहीं मिलेगा !' रंजन की आवाज दूर होती चली गई।

सुशील ने मुस्करा कर मधु की ओर देखा जिसके चेहरे से खुशी फूटी पड़ रही थी। लेकिन वह जबरदस्ती चेहरे पर क्रोध और गम्भीरता लाने की कोशिश कर रही थी। सुशील बाँहें फैला कर उसकी ओर बढ़ा।

'मैं आपसे नहीं बोलती।'

'मैं भी बोलने के लिए नहीं आया हूँ और न कह रहा हूँ।' सुशील ने हंस कर कहा और मधु को बांहों में ले लिया और उसके बालों को चूमने लगा।'

'मैं आना चाहता था लेकिन मेरे जिम्मे एक बहुत बड़ा काम था। रंजन भाई ने सीमा के सम्बन्ध में जो काम बतलाया था, हो गया है। सीमा की शादी तय कर आया हूं और सबसे बड़ी बात यह है कि सीमा ने अपनी जिन्दगी बदल ली है।'

'अच्छा बैठिए, रंजन भाई आते होंगे।' मधु ने कहा और अलग हो गयी।

'दिल तो नहीं चाहता !' सुशील ने उसी स्वर में कहा, 'इतने दिन किस तरह बिताए हैं, मैं ही जानता हूँ। हर पल इंतजार, हर पल बेचैनी। रात को आंखें मूंदता तो लगता तुम मेरे सामने बैठी हो। किताब पढ़ने के लिए उठाता तो जैसे प्रत्येक अक्षर में तुम्हारी तस्वीर झांकती दिखाई देती। शायद ही ऐसा कोई पल बीता हो जब मैंने यह महसूस किया हो कि तुम मेरे पास नहीं हो। मैंने तुमसे फोटो माँगा था, तुमने वह भी नहीं दिया।'

'जी हां !' मधु हँस कर बोली, 'एक ओर तो यह और दूसरी ओर दो लाइनें भी नहीं लिखी गयीं आपसे।'

'बना दिया, फिर भी डांट रही हो।' सुशील ने मासूमियत से कहा, 'अच्छा ! मैंने नहीं लिखा तो तुमने क्यों नहीं लिखा ? तुम्हारा तो केवल एक पत्र मिला था, उसका उत्तर भी मैंने दे दिया था।'

मधु ने आश्चर्य से सुशील की ओर देखा। उसे जैसे सुशील की बात पर विश्वास नहीं हुआ था। वह सुशील को ध्यान से देखती रही और बोली—

'क्या सचमुच आपको मेरे पत्र नहीं मिले ? मैंने तो आपको चार लिखे थे।'

'अरे भई, हमारे देश का डाक-विभाग बहुत ही अजीब है। खैर, रंजन भाई कहां रह गये ?'

'वह कम-से-कम आधे घण्टे बाद आयेंगे।' मधु मुस्करा कर बोली।

'बिल्कुल ठीक !' मधु फिर सिर झुकाए हुए बोली। जब सुशील ने उसके हाल-चाल के बारे में पूछा।

मधु बोली, 'रंजन भाई दिन में दो-तीन बार आते थे। घण्टों हम लोग आपकी बातें करते रहते थे। आज ही आपकी चर्चा करने लगे थे।'

तभी रंजन की आवाज सुनायी दी। वह कुछ बड़बड़ाता हुआ आ रहा था। अन्दर आते हुए उसने कहा—

'आओ भई चलें। मैं पर्स कार में ढूंढ़ रहा था लेकिन पर्स तो जेब में ही था।'

सुशील ने उठ कर मधु से कहा—

'मैं तो तीसरे पहर जाऊंगा।'

सुशील और रंजन कार में जा बैठे। कार स्टार्ट हुई तो सुशील ने कहा—

'रंजन भाई, बहुत-बहुत बधाई। सीमा घर आ गई है। मैंने उसकी शादी किशोर के साथ तय कर दी है। अब शादी का इन्तजाम करना है और इसके फौरन बाद मैं कल्पना को भाभी के रूप में देखना चाहता हूं।'

रंजन कुछ न बोला। उसका चेहरा कठोर हो उठा।

'आप सीमा की शादी की बात सुनकर खुश नहीं हुए ?'

'काश मुझे यकीन आ जाता !'

'घर पहुँचते ही आपको यकीन हो जायेगा।' सुशील बोला, 'मैं बिल्कुल निश्चिन्त हूं।'

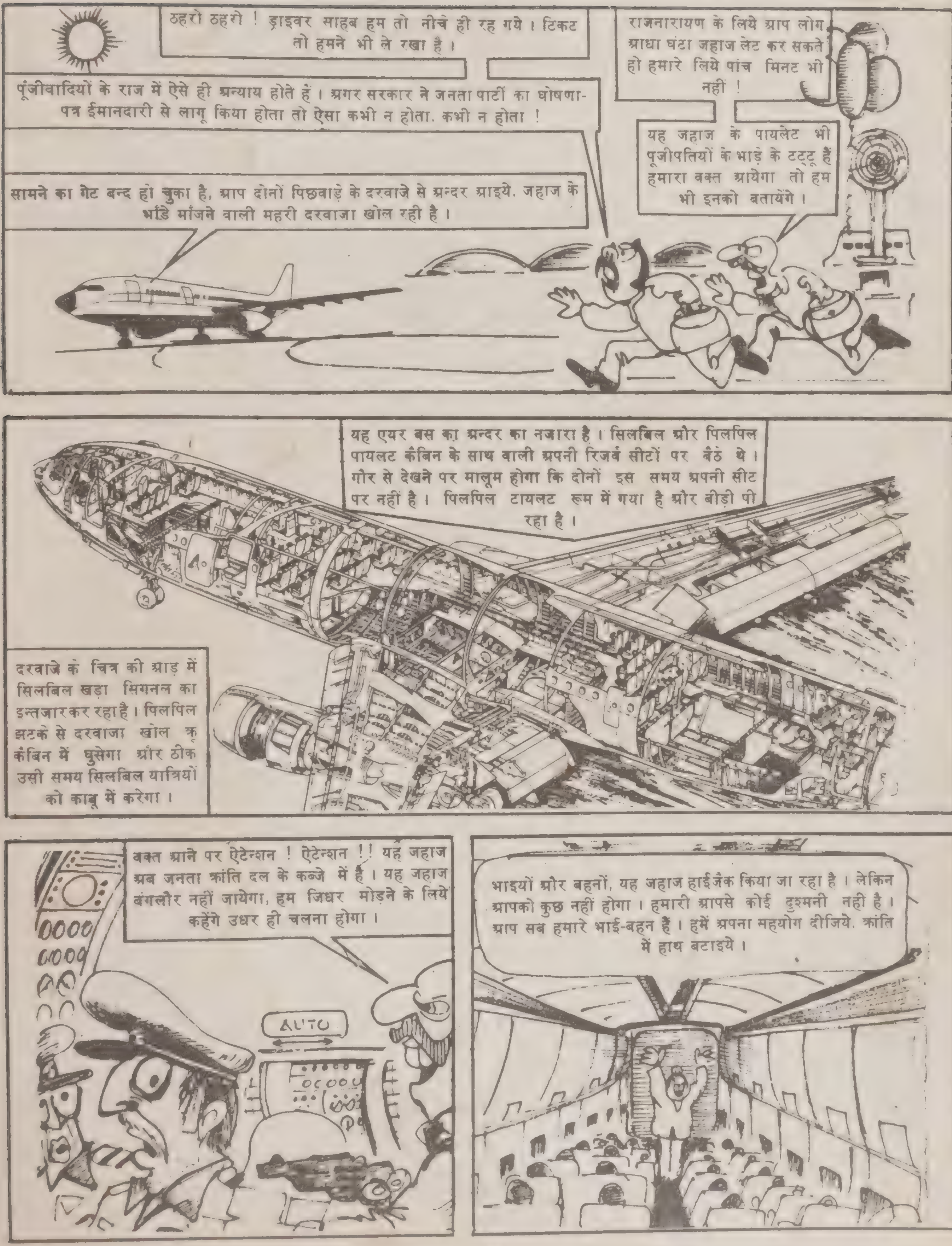
'तब फिर मैं इतना खुश हूं कि अगर एक्सीडेन्ट का खतरा न होता तो तुमसे अभी लिपट जाता।'

'कल्पना का क्या हाल है ? बहुत दिनों से उन्हें नहीं देखा। आज उनके यहाँ भी चला जाए ?'

'कल्पना यहाँ नहीं है !' रंजन ने कहा।

शेष पृष्ठ ३८ पर


आजकल थम दोनों मुझे ढीले-ढाले नजर आते हो । क्या किसान सम्मेलन ने थारी सारी चर्बी गला दी ? हमारा देश और भारत की राजनीति नाजुक मोड पर खड़ी है ।
खड़ी है तो खड़ी रहने दे । जब उसके गोड्डे दुखने लगेंगे वह अपने आप बैठ जायेगी ।
वह थमको रूमाल हिला कर बुला रही है, ऐसे मौके पर भारतीय राजनीति के चाचे थम दोनों मुंह मोड़ लोगे ? सारा देश सांस रोके थम दोनों को देख रिया है ।
याद करो वह मार्च १९७७ की रातें जब सर पर कफन पहन कर थम दोनों घर-घर जनता पार्टी के लिये वोट माँगने गये थे । थमने छाती पर हाथ रख कर सबको वचन दिया था कि थम भारत में आर्थिक और सामाजिक क्राँति लाओगे । सम्पूर्ण क्राँति के लिये ऐड़ी चोटी का पसीना एक कर दोगे । बाकी नेता तो थाली के बैंगन हैं लेकिन यह देख कर कि थम दोनों भी ऐसे में किनारा कर रहे हो बहुत दुख होता है । आज सरकार पर बूढ़े पूंजीवादी, प्रतिक्रियावादी तत्वों ने कब्जा कर लिया है । जनता को क्राँति का जो वादा किया गया था उसका क्या होगा ? भारत की जनता थमारे मुँह पर थूकेगी अगर थमने इन पूंजीवादी शक्तियों का मुकाबला न किया तो ?
यह थूकने वाली गल बेहूदी है, म्हारे पास पोंछने के लिये नया रूमाल भी नहीं है ।
हम सर्मिन्दा तो बोत हैं लेकिन हम क्या करें ? जब म्हारा नेता चौधरी चरण सिंह ही कैबिनेट में नहीं रहया तो हम क्या कर सकते हैं ?
हमें कुछ न कुछ रास्ता खोजना ही पड़ेगा सचमुच हमने जनता को क्रांति लाने का वादा दिया था । हमें अपने वचन की लाज रखनी ही होगी ।
मेरे दिमाग में एक तरकीब आ गयी है । हम दिल्ली से बंगलौर जाने वाले एयरबस हवाई जहाज को हाइजैक करेंगे, फिर गौरमींट के सामने क्रांति की अपनी मांगें रखेंगे । अगर हमारी मांगें पूरी न हुईं तो हम जहाज को बम से उड़ा देंगे ।
गौरमेंट को मजबूर होकर हमारे आगे झुकना पड़ेगा ।


ठहरो ठहरो ! ड्राइवर साहब हम तो नीचे ही रह गये । टिकट तो हमने भी ले रखा है ।
पूंजीवादियों के राज में ऐसे ही अन्याय होते हैं । अगर सरकार ने जनता पार्टी का घोषणा-पत्र ईमानदारी से लागू किया होता तो ऐसा कभी न होता. कभी न होता !
राजनारायण के लिये आप लोग आधा घंटा जहाज लेट कर सकते हो हमारे लिये पांच मिनट भी नहीं !
यह जहाज के पायलेट भी पूंजीपतियों के भाड़े के टट्टू हैं हमारा वक्त आयेगा तो हम भी इनको बतायेंगे ।
सामने का गेट बन्द हो चुका है, आप दोनों पिछवाड़े के दरवाजे से अन्दर आइये. जहाज के भांडे मांजने वाली महरी दरवाजा खोल रही है ।
यह एयर बस का अन्दर का नजारा है । सिलबिल और पिलपिल पायलट कैबिन के साथ वाली अपनी रिजर्व सीटों पर बैठे थे । गौर से देखने पर मालूम होगा कि दोनों इस समय अपनी सीट पर नहीं है । पिलपिल टायलट रूम में गया है और बीड़ी पी रहा है ।
दरवाजे के चित्र की आड़ में सिलबिल खड़ा सिगनल का इन्तजारकर रहा है । पिलपिल झटके से दरवाजा खोल कृ कैबिन में घुसेगा और ठीक उसी समय सिलबिल यात्रियों को काबू में करेगा ।
वक्त आने पर ऐटेन्शन ! ऐटेन्शन !! यह जहाज अब जनता क्रांति दल के कब्जे में है । यह जहाज बंगलौर नहीं जायेगा, हम जिधर मोड़ने के लिये कहेंगे उधर ही चलना होगा ।
AUTO
भाइयों और बहनों, यह जहाज हाईजैक किया जा रहा है । लेकिन आपको कुछ नहीं होगा । हमारी आपसे कोई दुश्मनी नहीं है । आप सब हमारे भाई-बहन हैं । हमें अपना सहयोग दीजिये. क्रांति में हाथ बटाइये ।


हम फिरौती की मांग करने वाले लालची हाईजैकर नहीं हैं । हम क्रांति के पुजारी हैं । हमें क्रांति लानी है हम आपके शुभ चिन्तक हैं । सामाजिक क्रांति का नारा लेकर जनता सरकार सत्ता में आई लेकिन जल्दी ही इस पर पूंजीवादी प्रतिक्रियावादी शक्तियां हॉबी हो गयीं । इसे हम सहन नहीं कर सकते । हमें क्रांति चाहिये,हमें आपसे कुछ नहीं चाहिये । म्हारी लड़ाई गौरमींट से सै ! हम इस जहाज को क्यूबा ले जायेंगे वहां से हम सरकार से मांग करेंगे कि वह अपनी पूंजीवादी नीतियां छोड़ गरीबों की भलाई की नीति अपनाये । जैसे ही हमारी मांग पूरी हो जायेगी । हम आपको जहाज सहित छोड़ देंगे । आज गरीब अमीरों की चक्की में पिस रहा है । अमीर मलाई खा रिया है और गरीब को पानी भी नहीं मिलता । टाटा व बिरला नये-नये कारखाने खोल रहे हैं गरीब की धोती खुल रही है, ऐसे में हम चुप कैसे बैठे रह सकते हैं ?
शाबाश ! मैं भी तुम्हारी तरह क्रांतिकारी हूं मैं तो खुद इस जहाज को हाईजैक करने वाला था । हमारा मकसद एक ही है।मैं बहुत काम का आदमी हूं, पहचाना मुझे मैं कौन हूं ?
आप वही तो नहीं जो पिछले महीने म्हारे घर से डेढ़ रुपये किलो अखबार खरीद कर ले गया था ?
धत्त ! मैं स्वर्गीय गोगिया पाशा का भतीजा पोपिया गाशा हूं ।
अब जहाज क्यूबा ले जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी । क्यूबा ले जाने में गड़बड़ी पैदा हो सकती है, स्कीम फेल हो सकती है गिली गिली गिली गिली मैं जादू से इस जहाज को कबूतर बना सकता हूं हम इसे कबूतर बना कर नैनीताल के किसी जंगल में ले जायें कोई हमें पकड़ नहीं सकेगा । किसी को गुमान भी नहीं होगा कि एयरबस कबूतर बन गया है ।
क्या यह संभव है ?
अभी देख लो तुम गिली गिली गिली गाशा छू ।
और इंडियन एयर लाइंस का एयरबस सचमुच ही कबूतर बन कर उड़ने लगता है ।
योजना के अनुसार कबूतर को यू. पी. की ओर मोड़ कर नैनीताल की तरफ ले जाया जाता है । एक घने जंगल में पेड़ पर कबूतर उतरता है ।
पोपिया गाशा साहब, अब इसे नीचे जमीन पर भी तो उतारिये । हमें अपना काम करना है, सरकार से सम्पर्क स्थापित करना है ।
कबूतर के रूप में इसे नीचे नहीं उतारा जा सकता । यह मंत्र जमीन से ऊपर का है, नीचे उतारने के लिये दूसरा जादू करना पड़ेगा जो इसे गधा बना देगा, गिली गिली गिली गाशा छू !



पिलपिल-सिलबिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये।

आपके पत्र

'दीवाना' का नया एवं ताजा ४१ वाँ अंक हस्तगत हुआ। सभी स्तंभ मजेदार लगे। 'सिलबिल-पिलपिल' एवं 'मोटू-पतलू' पढ़कर इतना आनन्द आया कि दिल ने कहा गला फाड़-फाड़ कर हंसो एवं छाती पीट-पीट कर रोग्रो. परन्तु सोचा ऐसा करने पर कहीं आगरे के पागल खाने का मेहमान बना दिया तो सिर पीट-पीट कर रोना पड़ेगा। अतः मन ही मन जी भर के हंसने-रोने के पश्चात आपको यह पत्र भेज रहा हूं. साथ ही लेखकों एवं पाठकों को हार्दिक बधाइयाँ भी। आशा है भविष्य में भी आप 'दीवाना' के माध्यम से हमारा इसी प्रकार मनोरंजन कराते रहेंगे।

योगेश कुमार अग्रवाल—डीमापुर

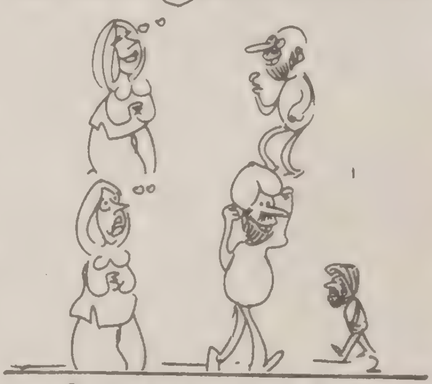
दीवाना सिर्फ किसी पत्रिका का नाम नहीं,
दीवाना, प्यार और मोहब्बत का एक दर्पण है
कि जिसमें राम से मिलते यहां रहीम भी हैं
हर एक फूलों से महका हुआ ये गुलशन है।
जमाने भर के गमों से निजात देती है,
गमों से जलते दिलों के लिये चंदन है।
कि जिसको देखने से दिल में ताजगी आये,
दिलों की प्यास बुझाये ये ऐसा सावन है।
करीब औ' दूर के लोगों को ये मिलाती है,
दिलों में प्यार बढ़ाये ये ऐसा दामन है।
खुशी के फूल महकते रहें कमल बनकर,
'निगार' यूं ही महकता रहे मेरा मन है।

निगार कैसर—शाहजहांपुर

'दीवाना' टॉकीज में 'मैं कुरसी तेरे आँगन की' देखने का विचार बहुत दिनों से था तकरीबन ४२ दिनों से। लेकिन इसके साथ मुसीबत यह थी कि नया प्रिंट ही नहीं आता था। कैसे मैं यह बता दूं कि 'दीवाना' टॉकीज की प्रत्येक फिल्म मैं अवश्य देखता हूं। लेकिन ७-८ चक्कर लगाने के बाद ही क्योंकि टॉकीज वाले तारीख तो १४ की दिया करते हैं लेकिन लगाते हैं ३० तारीख को।

खैर, प्रोग्राम बनाकर जब हम फिल्म देखने हॉल में पहुंचे तो स्थाई विज्ञापन (केवल उसी टॉकीज के लिये) चल रहे थे। आप निराश न हों आपको भी बताता हूँ, तो सुनिये—काका के कारतूस, परोपकारी, सिलबिल-पिलपिल, मोटू-पतलू, बन्द करो बकवास और सवाल यह है ? थे। इसके अतिरिक्त १९७९ का तोहफा, नये वर्ष के नये संकल्प भी मिला। पिक्चर इतनी अच्छी थी कि ऐसी इच्छा हुई कि फिल्म अभी लग जाये और उसे देख डालूं। अगर आप भी इसे देखना चाहते हैं तो जरूर देखिये टिकट दर है ? एक रुपया. है न सस्ती।

पवन खत्री—इन्दौर



दीवाना का नया अंक ४३ काफी इन्तजार के पश्चात् मिला। परन्तु दीवाना के अन्दर की मजेदार सामग्री ने सब कुछ भुला कर मन में नई खुशी उत्पन्न कर दी। 'एशियाई खेलों में हमारे लाड़ले फिल्म स्टार' बहुत ही पसन्द किया। 'फिल्मी स्टारों के लिए भविष्यवाणी' में बहुत रोचक बातें लिखी थीं। मोटू-पतलू में घसीटाराम की चटनी बनते देखकर दुख तो हुआ परन्तु हंसी भी आई कि ये एक सपना था। वैसे दीवाना हर सप्ताह नई सामग्री पेश करता है।

राज दीपक 'स्नेही'

दीवाना का १९७८ का अंक नं० ४२ मिला। इस अंक ने भी पूर्व वर्ष के अंकों की तरह खूब हंसाया। इसमें आपने फिल्म पैरोडी दी इस हेतु धन्यवाद ! घसीटाराम ने परिन्दा बनकर, सिलबिल ने गृहमंत्री बनकर खूब हंसाया। अन्य स्तम्भ मोटू-पतलू, परोपकारी, पन्चतन्त्र व चिल्ली लीला पसन्द आई। मोरारजी भाई के नाम चिल्ली सेवक का पत्र बड़े गर्व का था।

डी. के. मटाई—इन्दौर

आज काफी इन्तजार के बाद अपनी प्रिय पत्रिका 'दीवाना' का भागते साल का अंक ४२ आज ठीक साल के अन्तिम दिन प्राप्त हुआ तो आनन्द मग्न हो गया। आकर्षक मुखपृष्ठ से सज्जित इस अंक के मुख्य आकर्षण 'प्रेम-पत्र', 'चिल्ली लीला', 'परोपकारी', 'सिलबिल-पिलपिल', 'मोटू-पतलू' 'बन्द करो बकवास', 'मदहोश', 'सवाल यह है ?' आदि के अलावा विशेष फिल्म पैरोडी 'मैं कुर्सी तेरे आंगन की', 'नये वर्ष के संकल्प' के अतिरिक्त कहानी 'सुबह का तारा' (धारावाहिक) 'पृष्ठ भूमि' आदि सामग्री बेहद ही मनोरंजक व मोहक थी लेकिन घसीटाराम जी की दयनीय हालत बेहद ही कष्ट दायक थी कृपया भविष्य में दीवाना के कलाकारों को कष्ट से बचाने का प्रयत्न किया करें. आभारी होऊंगा क्योंकि अपने प्रिय कलाकारों की दुर्गति मुझ से देखी नहीं जाती। 'रंजीता' से भेंटवार्ता भी अच्छी रही मगर क्या, अच्छा होता अगर आप 'रंजीता' का पता भी प्रकाशित करते।

श्याम माहेश्वरी 'अशोक'—फारबिसगंज

मैं 'दीवाना' का पुराना और नियमित पाठक हूं। मुझे 'दीवाना' इतनी पसन्द है कि मैं इसे अपनी जुबान से व्यक्त नहीं कर सकता। काफी बेकरारी के बाद 'दीवाना' अंक ४२ मिला। इस अंक को पढ़कर मुझे काफी आनन्द मिला। विशेषकर 'काका के कारतूस', 'मैं कुर्सी तेरे आंगन की', नये वर्ष के संकल्प, 'बन्द करो बकवास', 'आपस की बातें', 'घसीटाराम की उड़ान' तथा कहानी 'पृष्ठ भूमि' काफी रोचक लगे। मैं वार्षिक ग्राहक बनना चाहता हूं, इसके लिए क्या करना पड़ेगा ?

सत्यपाल बधावन—कतरासगढ़

वार्षिक ग्राहक बनने के लिए आप ४८ रु० मनीआर्डर द्वारा भेज दीजिए—सं०

मैं कई वर्ष से दीवाना पढ़ रहा हूं मुझे दीवाना बहुत अच्छा लगता है। इस बार मुझे मोटू पतलू, सिलबिल-पिलपिल और सुबह का तारा उपन्यास बहुत अच्छा लगा।

आपकी सम्पादन कला निश्चय ही सराहनीय है। मेरी ओर से समस्त शुभ कामनायें आपके साथ हैं।

आप कृपया (सवाल यह है खत्म कर दीजिये और इसकी जगह और कई हास्य व्यंग स्तम्भ प्रसारित करें।

रामबाबू—कानपुर

चिल्ली लीला



दीवानी चिपकी

काटिये चिपकाइये और मज़ा लीजिये

इस रेलवे लाइन पर

चलते समय मत सोचिये

ख्यालों की गाड़ी पटरी से उतर जायगी

मोटू पतलू

के कारनामों में

प्लास्टिक सर्जरी से फिर ठीक होने के बाद घसीटा राम के हंगामें !

यह सोचना तो सब के लिये स्वाभाविक है कि यदि मैं सम्राट अशोक, चन्द्रगुप्त या अकबर होता तो क्या होता ? महाराणा प्रताप, शिवाजी मराठा या रानी झाँसी होता तो क्या होता ? मैं आईं स्टाईन, न्यूटन या भाबा होता तो क्या होता ? ध्यान चन्द, लाला अमरनाथ, नवाब पटौदी या बेदी होता तो क्या होता ? मैं लता मंगेशकर, जीनत अमान या अमिताभ बच्चन होता तो क्या होता ? मैं जैकी कैनेडी, शेख मुजीब-उ-रहमान, जुलफिकार अली भुट्टो, या इन्दिरा गांधी होता तो क्या होता ? मैं राजा भोज होता तो क्या होता ? या मैं गंगू तेली होता तो क्या होता ? यह सोचना तो सब के लिये स्वाभाविक है ।

पर हमारे घसीटा राम के सोचने की पकड़ सबसे आगे है । उन्हें महात्मा गांधी बनने का भी बीस साल का तजुर्बा है और नाथू राम गौडसे बनने का भी । वे कहते हैं मैं मुकद्दर का सिकन्दर होता या सिकन्दर का मुकद्दर होता तब भी ऐसा ही होता जैसा अब हूं । सोचने की बात तो यह है कि अगर मई जून की गर्मी में बहादुर शाह जफर मार्ग पर बर्फ गिरने लगे, दरिया में आग लग जाए, नदी नाव में डूबने लगे और भैंस पेड़ पर चढ़ कर बीन बजाने लगे तो क्या हो ???

एक रोज घसीटा राम जी एक पेड़ के नीचे लेटे 'अगर, मगर और यदि' की इसी उधेड़ बुन में लगे हुए थे कि दो उचक्के वहां आ पहुंचे ।











तेरी कटी पतंग की डोर मुसाफिर जाग जरा ।
यहां चोर को पड़ गये मोर मुसाफिर भाग जरा ।
हमें पहचान लिया किसी ने ?
चोर को पड़ गये मोर···?
तो प्यारे भाग जरा ।
आवाज सुन कर वह दोनों उचक्के घसीटा राम की गठड़ी वहीं छोड़ कर भाग गये ।
कुछ अजनबी हाथों ने गठड़ी खोली तो घसीटा राम जी अब तक बे सुध पड़े थे ।
लगता है मर गया है ।
पर यह तो मुस्करा रहा है ।
इसका मतलब है, यह मुस्कराने वाला मुर्दा है ।
इसे होश में लाने के लिये इस के मुँह पर पानी के छींटे दो ।
पानी के छींटों से तो कुछ नहीं बना । शर्म वाला होता तो इसके लिये चुल्लू भर पानी काफी था । इस पर पानी की पूरी बाल्टी डालो ।
घड़ों पानी पड़ गया । यह तो ऐसा चीकना घड़ा है कि अब भी मुस्करा रहा है पर होश में नहीं आया ।
लगता है शर्मा रहा है । पूरा शर्मिला टैगोर है ।
होश में लाने के लिये इसे जूती सुंघाओ ।



सुंघाने से क्या होगा, जूतीं मुँह पर मारो।
अरे मार डाला। मेरे सर को ईरान की राजधानी बना दिया।
अब घसीटाराम जी को होश आया तो उन्हें दिन में तारे दिखाई दे रहे थे। उन्हें अपनी आंखों पर एतबार नहीं आ रहा था कि वे वास्तव में आँखें हैं, संतरे की फांकें हैं या भीमसैनी काजल की डिबिया हैं।
मैं कहां हूं ? तुम कौन हो ?
तुम भूतकाल में आ गये हो बच्चा। मैं गुरु घंटाल हूं। यह दो मेरे चेले हैं। एक का नाम जी का जंजाल और दूसरे का नाम खड़ताल है।
हमने तेरे मुर्दे में जान डाली है। इसलिये हम तुम्हें भी अपना चेला बनाते हैं। हमारा नाम गुरु घंटाल है। यह उल्लू जी का जंजाल है। तू मंजीरा है और यह खड़ताल है।
मैं भूतकाल में आ गया हूं ? आप गुरु घंटाल हैं ? मैं मंजीरा हूं और यह खड़ताल है ? आप धन्य हैं महाराज। मुझे अपना चेला बना कर आप ने मेरा जीवन सफल कर दिया है।
क्या उल्लुओं जैसी बात कर रहा है मंजीरे। जीना सफल नहीं बनाया है मरना सफल बनाया है।



मैं अब भूतकाल में आ ही गया हूं चाल से सबको भूत बना दूंगा गुरु घंटाल ।
मुझे भूख लगी है स्वामी जी ।
चल मेरे मंजीरे । चल खड़ताल । उस नगर की ओर चलते हैं ।
कहां ले चले हो, बता दो मुसाफिर, ये कैसी जमीं और ये कैसा आसमां है,
वह सामने है नगरी का द्वार ।
अंधेर नगरी चौपट राजा ।
कितना सुन्दर नाम है !
अन्धेर नगरी चौपट राजा
मैं तो वास्तव में भूतकाल में आ गया हूं । यह तो वही अंधेर नगरी है, जिसकी कहानी मैंने पांच साल की उम्र में पढ़ी थी ।
और पांच साल की उम्र में भी तुम्हें इस नगरी का हाल जानने का बीस साल का तजुर्बा था ।
यह तो मजा आ गया गुरु घंटाल, अगर यह वही अंधेर नगरी है तो अपने पौबारह हो जाएँगे ।
तू ठीक कह रहा है मंजीरे ।
इसके साथ तेरा भी दिमाग खराब हो गया है खड़ताल । मेरे विचार में इस नगरी में अधिक देर नहीं ठहरना चाहिये ।
तभी घसीटा राम के कंधे पर लटकते ट्रांजिस्टर ने समाचार प्रसारित करने शुरू कर दिये ।
यह दरिद्र भारती है । अब आप विनोद गपशप से समाचार सुनिये ।
हमारे जमाने में तो विनोद कैशप से समाचार सुनते थे ।



महाराज चौपट ने चूरण सिंह की बात बताने से इंकार करा। श्री चारपाई ने बालों की नोकों में दर्द के कारण चीन का दौरा रद्द कर दिया। महाराज फराड ने चक लंगूर चुनाव दंगल के लिए फिर ने ....
वह सामने हलवाई की दुकान है। मैं वहां दूध पीऊंगा।
मक्खन हल
मंजीरे को एक गिलास दूध पिलाओ भाई हलवाई।
आहा...हा...हा। दिमाग खराब हो गया है तुम्हारा।
चौपट नगरी में दूध गायें पीती
और आदमी क्या घास खाते हैं?
आमलेट मुर्गी खाती है।
और आदमी अंडे सेहता है?
दम मारो दम। मिट जाये गम, खालो सुबह शाम, सड़े छिलके सड़े आम।
मैं तो खाऊंगा बादाम, अपने मुंह को दे लगाम, तू कर ले जूते को सला



आगामी अंक में फिर अंधेर नगरी और चौपट राजा की झलकियां देखना न भूलिये।


शेर जी, में प्लास्टिक की कंघियों का सेल्ज़ मैन हूं, आपके बालों को कंघी की जरूरत है। इतने शानदार बाल कंघी के बिना बिफरे से लगते हैं। आप मेरी कंघी से बाल संवार कर देखिये, आपका जंगल में रौब दुगना हो जायेगा।
शेर का कंघी लेना था कि दूसरे सेल्जमैन आकर शेर को बालों का ब्रुश, पिलक्रीम, शैम्पू, खिज़ाब, रुखी दूर करने वाला तेल, साबुन, वैसलीन, सैंट की शीशियां, बाल बनाने के लिए शीशा, डैन्डरफ मार दवाई, बाल बढ़ाने का तेल, बाल घुंघरदार बनाने वाली नलकियां आदि बेच गये।
TA Shampoo
PILCREAM
DYE
पंच तंत्र
हालत यहां तक पहुंची कि शेर की सारी मांद बाल प्रसाधन के सामान से अट गयी। तिल रखने की जगह नहीं रही। सर्दियों की कड़कड़ाती रातें बाहर बितानी पड़ीं तो शेर को निमोनियां का खतरा हो गया। इस मौके पर बुलन्म के सेल्जमैन आकर शेर को ओवर कोट, गर्म गाऊन, पुलओवर, फर कोट, दस्ताने, जुराबें और गर्म टोपियां वगैरह बेच गये।
कपड़े आने पर उनकी सफाई के लिये वाशिंग मशीन लेनी पड़ी। वाशिंग मशीन के लिए बिजली का कनेक्शन लेना पड़ा। बिजली आ गई तो कंपनी वाले टोस्टर, हीटर, हॉट प्लेट, इलैक्ट्रिक ग्रिल, हेयर ड्रायर आदि शेर को बेच गये।
Washing MACHINE
और आखिर एक दिन शेर का दीवाला निकल गया।
शिक्षा—यह उपभोगता सामग्री का जमाना है। आम नाग रिक का घर एक किला है। उद्योगपतियों की सेल्जमैनों की फौजें इस किले पर कब्जा करने के लिए हरदम घात लगाये बैठी हैं। जिस प्रकार एक जगह से किला ढह जाये तो दुश्मन की सारी की सारी फौज वहां से अन्दर घुस आती हैं उसी प्रकार एक भी सेल्जमैन को आपने मुंह लगाया नहीं कि सेल्जमैनों की फौजें आपके घर कब्जा कर लेंगी। उन्हें आपके किले में छोटा सा छेद भर चाहिए।

खेल खेल में

राकेश कपूर—रोहतक, हरियाणा

प्र० : कृपया यह बताएं कि पिछले क्रिकेट विश्वकप में श्रीलंका खेला था या नहीं ।

उ० : श्री लंका खेला था ।

पहला मैच वेस्ट इंडीज से हारा था ।

दूसरा मैच ग्रास्ट्रेलिया से हारा था ।

ग्रास्ट्रेलिया के विरुद्ध मैच उल्लेखनीय रहा ।

ग्रास्ट्रेलिया ने साठ ग्रोवरों में ३२८ रन बनाये । जवाब में श्रीलंका बैटिंग को उतरा तो थामसन ने दलीप मेंडिस के सिर में बम्पर मारा,वह वहीं धराशायी हो गया । उठाकर हस्पताल ले जाना पड़ा । सुनील वेट्टीमुनी जिन्होंने बहादुरी से ५३ रन बनाये थे थामसन के दूसरे शिकार हुये । दो बार बम्फर गेंद उनकी रिबज में लगी, तीसरी बार पांव में । दर्द के मारे वेट्टीमुनी लड़खड़ा गये । इस लड़खड़ाहट में वह क्रीज से बाहर हुए । थामसन ने गेंद उठाकर उनकी विकटों में दे मारा । बाद में थामसन की इस हरकत की ग्रालोचना भी हुई । लेकिन श्री लंका के खिलाड़ियों ने हौसला नहीं खोया । उन्होंने ६० ग्रोवरों में चार विकट खोकर २७६ रन बनाये । हम यह घटना इसलिए बता रहे हैं कि भारतीय खिलाड़ियों को इससे सबक लेना चाहिये । वेस्टइंडीज टूर के समय किंगस्टन में जो हुग्रा सबको पता होगा । होल्डिंग की बर्बर गेंदबाजी के ग्रागे हमारे कई खिलाड़ी घायल हो गए, बेदी ने होल्डिंग को बमबारी से बचने के लिए पहली इंनिग्ज ६ विकटों पर तथा दूसरी पांच विकटों पर घोषित कर दी, वेस्ट इंडिज जीत गया । क्या हम श्रीलंका की तरह (जो कि टैस्ट मैच तक नहीं खेलता) बहादुरी से ग्राखिरी खिलाड़ी तक मुकाबला नहीं कर सकते थे ?

प्रितपाल सिंह—पटियाला

प्र० : क्या सुनील गवास्कर ने द. ग्रफ्रीका के साथ कोई टैस्ट मैच खेला है ?

उ० : नहीं ! भारत कभी द. ग्रफ्रीका के साथ क्रिकेट नहीं खेला । हां सुनील को दक्षिणी ग्रफ्रीका के खिलाड़ियों के साथ दूसरी जगहों में खेलने का ग्रवसर जरूर मिला है । १९७१ में सुनील विश्व एकादश में थे जो ग्रास्ट्रेलिया के विरुद्ध खेली थी । इस टीम के कप्तान गैरी सोबर्स थे ग्रौर इस टीम में द. ग्रफ्रीका के खिलाड़ी वैरी रिचर्डस ग्रादि भी शामिल थे । इसके ग्रतिरिक्त १९७८ में न्यूयार्क में एक नुमाइशी मैच हुग्रा था जिसमें ग्रमरीका की टीम तथा क्रिकेट खेलने वाले देशों की मिली जुली टीम थी । इस मिली जुली टीम में द. ग्रफ्रीकी भी थे ग्रौर सुनील भी । इसके ग्रलावा जब भारत इंगलैंड या ग्रास्ट्रेलिया के दौरे पर जाता है ग्रौर वहां के काऊंटी टीमों से मैच खेलता है तो दक्षिणी ग्रफ्रीका के खिलाड़ियों से सामना हो जाता है जो इन काऊंटी टीमों में होते हैं ।

सुरेश खुराना 'पप्पी'—जीन्द

प्र० : कबड्डी खेल में भारतीय टीम का क्या योगदान है ?

उ० : योगदान क्या, कबड्डी का जन्मदाता ही भारत है ग्रौर यह खेल केवल हमारे ही देश में खेला जाता है । भारतीय ग्रपनी टीमें भेज पड़ौसी देशों में इसका प्रचार करने का यत्न कर रहे हैं ताकि यह खेल अंतर्राष्ट्रीय बन जाये । १९८२ में होने वाला एशियाई खेलों का ग्रायोजन भारत कर रहा है । शायद इन खेलों में भारत कबड्डी के रखवाने में सफल हो जाये ।क्यों कि मेजबान देश को काफी विशेषाधिकार प्राप्त होते हैं । इस प्रकार एक बार यह खेल भारत अंतर्राष्ट्रीय मंच पर प्रस्तुत करने में सफल हो जाता है तो बहुत जल्दी ही अंतर्राष्ट्रीय जगत इस रोचक संघर्षमय खेल को ग्रपना लेगा । ग्रौर फिर वह दिन भी दूर नहीं रहेगा जब विश्व ग्रोलम्पिकस में कबड्डी के स्वर्ण पदक के लिये, वैसा ही घोर संघर्ष छिड़ जाये जैसे दूसरे टीम खेलों के सामने में होता है ।

भाई अमर कुमार श्रेष्ठ 'मंजू'—नेपाल

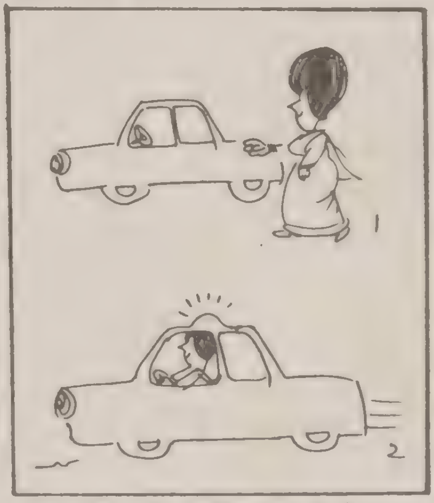
प्र० : पाकिस्तान की 'महिला हॉकी टीम' ने कभी किसी ग्रोलम्पिक में भाग लिया है या नहीं ?

उ० : नहीं । फिलहाल महिला हॉकी ग्रभी विश्व कप के रूप में ही खेला जा रहा है । ग्रब तक ग्रोलम्पिक मुकाबलों में महिला हॉकी शामिल नहीं है । पाकिस्तान ग्रभी महिला हॉकी विश्व कप में भी भाग नहीं लेता महिला खेलों में पाकिस्तान के सामने न ग्राने का यह भी कारण है कि वहां रूढ़िवादी समाज होने के कारण महिलाग्रों के खुलेग्राम खेलों में भाग लेने पर लोग नाक-भौं सिकोड़ने लग जायेंगे । पाकिस्तान में भी महिलाग्रों को स्वतंत्रता मिल रही है व पर्दा प्रथा घट रही है लेकिन इसकी गति भारत के मुकाबले बहुत कम है ।

अनिल खुराना—सब्जी मंडी, जीन्द

प्र० : बास्केट बाल में किस देश की टीम विश्व चैम्पियन है ?

उ० : बास्केट बाल में पुरुषों में ग्रमरीका तथा महिलाग्रों में रूस चैम्पियन है ।



डा० सतीन्द्र जैन—जबेरा (म० प्र०)

प्र० : ग्रास्टो टर्फ ग्राऊंड कहां पर है ? इनके बारे में जानकारी दें ।

उ० : सभी धनी पश्चिमी देशों में ग्रास्ट्रो टर्फ हैं । जापान में भी हैं। ग्रास्ट्रो टर्फ एक कृत्रिम मैदान है । ऐसे ही समझिये जैसे नायलोन के बालों (घास) वाला गलीचा हो । ग्रोलम्पिक में ग्रब ऐसे ही टर्फ का प्रयोग हो रहा है । बहुत महंगा होने के कारण यह गरीब देशों में नहीं लगाया गया है । एक हॉकी ग्रास्ट्रो टर्फ मैदान लगाने पर ५०-६० लाख रुपये का खर्चा है ।

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

हाकी कैसे खेलें

अन्डर कट

यह एक खतरनाक स्ट्रोक है। इसमें चोट लगाने तक का डर रहता है।

इसमें कई बार गलत ढंग से गेंद रोकते समय या स्कूप अथवा हिट करते समय गेंद स्टिक के सपाट वाले हिस्से की किनारी वाली धार से लगकर उछल जाती है। तेज आती हुई गेंद तो बहुत ऊँची या तिरछी होकर तेजी से उछलती है जिससे किसी भी खिलाड़ी को चोट लग सकती है। इसी स्ट्रोक को 'अन्डर कट' कहते हैं। लेकिन कभी-कभी अनजाने में भी हो जाता है क्यों कि जोश में खेलते हुए खिलाड़ी कभी-कभी जल्दबाजी में गलत ढंग से स्टिक गेंद पर डाल देता है। इसका निर्णय भी अम्पायर भी परिस्थिति के अनुसार ही लेता है।

बैक स्टिक

खेलते समय कई बार खिलाड़ी की स्टिक के सपाट वाले सीधे हिस्से के पीछे वाले गोल हिस्से मे गेंद टकरा जाती है या खिलाड़ी स्टिक को गेंद पर मारने के लिए जल्दबाजी में सीधा नहीं कर पाता और उल्टी स्टिक से गेंद पर प्रहार कर देता है। ऐसी गलती को 'बैक स्टिक फाउल' कहते हैं। ऐसा करने पर अम्पायर उसे चेतावनी दे देता है। लेकिन इसके बावजूद भी यदि वह खिलाड़ी जान-बूझ कर उल्टी स्टिक का प्रयोग करता है तो अम्पायर उसे खेल से बाहर भी निकाल सकता है। थोड़े समय के लिए निकाला गया खिलाड़ी अपने क्षेत्र की जाली के पीछे जाकर बैठ जाता है। अम्पायर के आदेश पर ही वह पुनः खेल में भाग ले सकता है।

रोल इन

गेंद जब तक मैदान में खेल की सीमा के अंदर रहती है, तब तक खेल चलता रहता है। लेकिन यह संभव ही नहीं होता कि गेंद सीमा के बाहर न जाए। साइड लायनों के बाहर तो गेंद कई बार बाहर जाती है। उस वक्त थोड़ी देर के लिए खेल रुक जाता है। जब गेंद पुनः मैदान में लाई जाती है तो खेल पुनः शुरू करने के लिए गेंद को हाथ से लुढ़काना पड़ता है—इसे 'रोल इन' कहा जाता है। जिस स्थान से गेंद सीमा के बाहर जाती है, उसी स्थान की साइड लाइन से विपक्ष दल का हाफ या कोई अन्य खिलाड़ी गेंद को मैदान में लुढ़काता है।

जब गेंद मैदान में लुढ़कायी जाती है तो उस समय दोनों ही टीमों के अन्य खिलाड़ी 'गैलरी' के बाहर की ओर खड़े रहते हैं और गेंद को अपने-अपने नियंत्रण में लेने की ताक में रहते हैं।

गेंद लुढ़काने वाला खिलाड़ी ऐसा प्रयत्न करता है कि उसके द्वारा लुढ़काई जाने वाली गेंद उसके ही किसी साथी के हाथ में आये। गेंद 'रोल इन' करते समय जमीन से लगती हुई ही जानी चाहिए। वरना उसे फाउल मान लिया जाता है और विपक्षी टीम को फ्री हिट लगाने का लाभ दिया जाता है।

लेफ्ट. चैकिंग

गेंद लेकर बढ़ते हुए किसी खिलाड़ी से उसकी बायीं ओर से उल्टी स्टिक डालकर गेंद छीनने का प्रयत्न करने को 'लैफ्ट चैकिंग' कहते हैं।

बायीं ओर से गेंद छीनी जा सकती है लेकिन स्टिक का सही ढंग से उपयोग करते हुए तथा विपक्षी खिलाड़ी को बिना नुकसान पहुंचाए।

इन सब नियमों और बाधाओं के अतिरिक्त अन्य प्रकार की गलतियां भी हो सकती हैं—जैसे कोई खिलाड़ी विपक्षी खिलाड़ी को धक्का दे दे, टांग मार दे, पकड़ ले या स्टिक के मुड़े भाग को उसकी टांग में फंसाकर गिरा दे, अम्पायर से दुर्व्यवहार करे अथवा किसी अन्य खिलाड़ी से। ऐसी स्थिति में अम्पायर दंड देने का निर्णय उसी समय लेता है। वह क्या दंड देता है, वह उसी पर निर्भर होता है।

इन सब ऊपर लिखित बाधाओं के अलावा पेनल्टी कार्नर, लौंग कार्नर तथा पेनल्टी स्ट्रोक जैसे फाउल भी होते हैं। लेकिन खेल में इन फाउलों का बड़ा महत्व होता है। क्योंकि इसका फायदा उठाकर कभी-कभी कमजोर और हारती हुई टीम भी विजयी हो जाती है।

पैनल्टी-कार्नर तथा लौंग कार्नर

खेलते समय खेल के गम्भीर नियम भंग होने पर दोषी टीम को पेनल्टी-कार्नर से दंडित करने का विधान है। यदि आक्रमणकारी टीम प्रतिरक्षक टीम के गोल पर हावी हो और गोल किए जाने की बहुत सम्भावना हो तथा ऐसी दशा में प्रतिपक्षी टीम का खिलाड़ी गोल होने से रोकने के उद्देश्य से जानबूझ कर नियम को तोड़ दे, तो आक्रमणकारी टीम को इसके हरजाने के तौर पर प्रतिरक्षक टीम के विरुद्ध पैनल्टी-कार्नर लेने के लिए कहा जाता है।

पैनल्टी-कार्नर

पैनल्टी-कार्नर के लिए फ्री हिट, रक्षक-गोल रेखा के किसी भी स्थान से जो किसी भी गोल-स्तम्भ से दस गज की दूरी पर हो, लगाया जाता है। रक्षक टीम के केवल छः खिलाड़ी (गोल कीपर सहित) गोल की रक्षा के लिए रहते हैं। शेष खिलाड़ियों को मध्य रेखा पर खड़ा रहना पड़ता है। आक्रमणकारी टीम के खिलाड़ी 'डी' के बाहर मैदान में कहीं भी खड़े रह सकते हैं।

पैनल्टी-कार्नर को गोल में परिवर्तित करने के लिए तीन मुख्य खिलाड़ी होते हैं—एक जो कार्नर से हिट लगाता है, दूसरा जो स्ट्राईकिंग सर्किल पर इस गेंद को रोकता है। गेंद स्टिक या हाथ से कैसे भी रोकी जा सकती है और तीसरा गेंद को हिट करके गोल में फेंक देता है। रोकने वाला खिलाड़ी स्वयं भी इस गेंद पर हिट लगा सकता है। पैनल्टी-कार्नर में यह भी आवश्यक नहीं है कि कोई गेंद को रोक ही ले, 'डी' पर खड़ा एक ही खिलाड़ी गेंद गोल में दागने का प्रयास कर सकता है परन्तु गेंद को कुछ हद तक 'स्थिर' कर लिया जाना चाहिए। यह वह मौका होता है, जब दोनों टीमों के खिलाड़ियों की फुर्ती, चतुरता और तुरन्त कार्रवाई की क्षमता की परीक्षा होती है। यदि रक्षक खिलाड़ी सतर्क हैं तो वे गोल रोक लेते हैं। दूसरी तरफ स्ट्राईकिंग सर्किल से हिट करने वाले खिलाड़ी का निशाना यदि अचूक है, तो गोल हो जायेगा।

(क्रमशः)



फैण्टम और तीन लुटेरे
हीरो और हत्यारे ।
हिन-हिन न न
जैसे ही मैक हीरो को गोली मारने लगता है, डेविल उस पर झपट पड़ता है···
हीरो···डेविल ?
कौन है यह ?
वैसे मुझे ज्यादा तो नहीं पता फिर भी जितना पता है मैं बताता हूं ।
जैसे ही मैक बन्दूक को डेविल की सीध में लाता है, एक मंजे हुए कलाबाज की तरह डेविल पीछे को कलाबाजी खाता है···
गोली से उड़ा दो इस जानवर को ?
बन्दूक के सामने अपनी आत्म सुरक्षा के लिये सिखाई गई ट्रिक ।
तुमने देखा उसको ?
कमाल है !
यह ट्रिक कामयाब सिद्ध हुई ।
जरूर पहले सर्कस में रहा होगा ।
क्या कमाल का कुत्ता था ?
अरे !
मुश्किल है कहीं तुम्हें न लग जाये···
ई ई ई ई !
मैक···मारो··· इसे गोली मारो ।
इसी तरह पकड़े रखो···!
मैं नहीं चाहता कि गलती से तुम्हें लग जाये ।
मैक···इसे गोली जल्दी मारो !
बचाओ !
हिलो मत···हां एक दो···
हि हि हि ई ई ई
फैण्टम का हीरो भी पूरी तरह दुश्मन का मुकाबला करने की क्षमता रखता है···
?



ओह ! मैक···भगवान के लिये किसी तरह इसको यहां से हटा दो !
ये पागल जानवर, मैं अभी इन दोनों का काम तमाम करता हूं !
हैं ? गोली की आवाज !
ठांय ! ठांय !
डेविल तुमने इस हत्यारे को पकड़ कर बहुत अच्छा काम किया है !
भगवान के लिये इसको हटा लो नहीं तो मेरे सिर का कीमा बना देगा !
घर्र्र्र
तुम्हारा नाम ड्यूड है··· तुम्हारा दूसरा साथी मैक कहां है ?
तुम जो कहोगे करूंगा, तुम्हारे पांव पड़ता हूं भगवान के लिये इस जानवर को हटा लो···
मैक ऐसे भागता है जैसे कोई राक्षस उसका पीछा कर रहा हो !
जितना हो सके मुझे उससे दूर भागना है···!
क्रमशः



पहचानिये प्रतियोगिता
इनाम 10 रुपये
आपको यह बताना है कि यह किस फिल्म का सीन है।
अन्तिम तिथि १० फरवरी १९७९
अपने हल केवल पोस्टकार्ड पर ही लिख कर भेजें – एक से ज्यादा सही हल मिलने पर निर्णय लाटरी द्वारा किया जायेगा-सं०

प्र० : उड़न तश्तरी क्या है ?

चन्द्रशेखर कपूर, धनराज कपूर—धनबाद

उ० : उड़न तश्तरी या न पहिचानी जाने वाली कोई वस्तु या जिसे यू० एफ० ओ० भी कहते हैं के अस्तित्व के बारे में लम्बी खोजों के बाद भी कोई विशेष सन्तोष-जनक उत्तर नहीं मिल पा रहा है। समझा जाता है कि कभी किसी वस्तु को गलत पहिचान कर यू० एफ० ओ० समझा जाता है तथा कभी-कभी ऐसा वहम ही हो जाता है कि कुछ अनजानी वस्तु इधर आई है। फिर भी इस सम्बन्ध में एक बहुत ही रोचक घटना आपको बताते हैं। जिसकी अमरीकी यू० एफ० ओ० की खोज करने वालों ने व्याख्या भी दी है।

सन् १९७३ के अक्तूबर मास की रात्रि के समय ओहियो आर्मी का एक हैलीकोप्टर बिल्कुल साफ मौसम में उड़ रहा था, ये हैलीकोप्टर ७५० मीटर की ऊँचाई पर ओहियो मैन्सफील्ड के पास उड़ रहा था। तब इस हैलीकोप्टर में बैठे चार चालक सदस्य ये देखकर डर गये कि कोई जलती हुई लाल वस्तु बड़ी तीव्र गति से उनकी ओर आ रही है। टक्कर से बचने के लिए इस हैलीकोप्टर के चालक श्री लारेन्स कोयन ने अपने सदस्यों को सावधान कर तेजी से विमान को नीचे गिराना आरम्भ कर दिया। जब अन्तिम बार उन्होंने अपने विमान की ऊंचाई को देखा तो विमान ५०० मीटर पर था, इस समय भी जलती हुई वस्तु विमान की ओर आ रही थी। परन्तु कोयन ने बताया कि जब उन्होंने ऊपर देखा तो वो अनजानी वस्तु विमान से १५० मीटर ऊपर ठहरी हुई थी ये वस्तु मटियाले रंग की धातु की प्रतीत होती थी। ये वस्तु १५ से १८ मीटर लम्बी थी तथा हरा सा प्रकाश उसके पीछे से दिखाई दे रहा था। इस हरे प्रकाश से विमान का कोकपिट भर गया था। परन्तु कुछ ही क्षण बाद ये किसी प्रकार की इंजन की ध्वनि करे या हिले डुले बिना तीव्र गति से ऊपर को उठने लगा तथा जब चालक कोयन ने दुबारा अपने विमान की सुई को देखा तो विमान १००० मीटर की ऊंचाई पर उठ चुका था। हालांकि चालक के अनुसार उन्हें विमान के किसी भी यन्त्र को छूने के बारे में बिल्कुल याद नहीं। क्या ये विमान यू० एफ० ओ० द्वारा ऊपर को

क्यों और कैसे

खींचा गया था ? एक और रहस्यमय बात ये है कि इस समय के दौरान विमान का रेडियो, जो बिल्कुल ठीक काम कर रहा था बिल्कुल बेकार हो गया था और इसी कारण चालक इस समय किसी भी हवाई अड्डे से सम्पर्क स्थापित न कर पाये थे। क्लिवलैंड पर उतरने पर चालक को पता चला कि इस दौरान कोई भी और विमान वहाँ नहीं उड़ रहा था।

इस घटना के बारे में वहाँ के हवाई अड्डे के अनुसार कोई रहस्यमय चीज उस स्थान पर नहीं देखी गई तथा किसी कारण-वश विमान के चालक सदस्यों ने इसे अनुभव किया था तथा इसलिए विमान को टक्कर से बचाने के लिए नीचे उतारा था, परन्तु चालक को विमान को ऊपर उठाने का यन्त्र छूने के बारे में बिल्कुल याद नहीं है। इसके बारे में कहा गया कि एक कुशल चालक होने के कारण, विमान के खतरे की निचाई पर पहुंचते ही अनजाने में उन्होंने उसे ऊपर उठाना आरम्भ कर दिया होगा तथा हरा प्रकाश अज्ञात भय के कारण ही अनुभव हुआ होगा।

इटली में अभी हाल में ही कुछ यू० एफ० ओ० देखे गये बताये जाते हैं। कोई उसे चमकता तारा तथा दूसरे चमकता गोला बताते हैं। कहते हैं न्यूजीलैंड के ऊपर उड़ती हुई एक यू० एफ० ओ० के बाकायदा चित्र लिये गये हैं तथा उन चित्रों को टेलीविजन पर भी दिखाया गया। इन चित्रों में यू० एफ० ओ० चमकती हुई एक पिंग पोंग की गेंद के समान दिखाई गई। इस गेंद के बीचों बीच एक लाल निशान भी है ये चित्र रात को और प्रात: के प्रकाश दोनों में ही लिये गये बताये जाते हैं अभी भी निश्चित रूप से कहा नहीं जा सकता कि ये क्या हैं। एक वैज्ञानिक के अनुसार उन्होंने एक चमकती हुई पिंग पोंग की गेंद सी वस्तु आकाश में देखी। इस वस्तु के प्रभाव से वहाँ रेडियो खुल गये तथा वहाँ की स्थानीय टेलीफोन व्यवस्था अस्त व्यस्त हो गई।

प्र० : प्रकाश क्या है, ये किस चीज से बनता है ? नरेश—अहमदाबाद

उ० : प्रकाश की सहायता से ही हम अपने चारों ओर फैले संसार को देख पाते हैं और इसके अभाव में चारों ओर अन्धकार ही होता। फिर भी हमें पूरी तरह ये ज्ञात नहीं है कि वास्तव में प्रकाश क्या है ?

प्रकाश एक प्रकार की उर्जा है इसकी गति को नापा जा सकता है, तथा प्रकाश के व्यवहार से भी परिचित हैं। सफेद प्रकाश कोई विशेष प्रकाश न होकर बहुत से रंगों के मिश्रण से पैदा होता है। इसे हम प्रति-बिम्ब भी कहते हैं। हमें ये भी मालूम है कि रंग दिखने वाली वस्तु में नहीं होता अपितु वो प्रकाश के रंग से ही रंगीन दिखती है।

सूर्य का प्रकाश उर्जा है। सूर्य के प्रकाश या धूप को लैंस के द्वारा फोकस करने से आग जल उठती है। सफेद वस्तुएं प्रकाश तथा गर्मी को प्रतिबिम्ब कर देती है, इसके विपरीत काले रंग की वस्तुएं गर्मी तथा प्रकाश को जज्ब कर लेती हैं, यही कारण है कि काले कपड़ों से सफेद कपड़े ठंडे रहते हैं।

प्रकाश के बारे में सबसे पहले खोज श्री इस्साक न्यूटन नामक व्यक्ति द्वारा की गई। इनके अनुसार प्रकाश छोटी-छोटी कणिकाओं से बना है, परन्तु प्रकाश के बहुत से व्यवहारों को इस मत द्वारा समझाया नहीं जा सका।

इसके बाद एक और सिद्धांत श्री ह्यूगोस द्वारा खोजा गया। इन्होंने प्रकाश तरंगों का पता लगाया। इनका मत था कि प्रकाश तरंगें उत्पन्न करता है ये लहरें या तरंगें ठीक उसी प्रकार उत्पन्न होती हैं जैसे पानी में पत्थर फेंकने से लहरें उत्पन्न होती हैं।

आज विज्ञान प्रकाश को कणिकाओं से बना तथा तरंग उत्पन्न करने वाला दोनों ही प्रकार का मानता है क्योंकि प्रकाश का व्यवहार दोनों तरह का ही है। तथा इन दोनों सिद्धान्तों को प्रकाश के व्यवहार पर किये गये परीक्षणों द्वारा प्रमाणित किया जा सकता है। इसलिए हम कह सकते हैं कि प्रकाश क्या है का कोई भी एक सही उत्तर नहीं दिया जा सकता।

क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

फिल्म देखने का

असली मजा

फिल्में प्रायः बोर होती हैं। वही रटे रटाये संवाद और वही दोहराये गये दृश्य तथा सीचुयेशन। ऐसे बोरियत भरे बोझिल वातावरण में दर्शक ही स्थिति को संभाल जाते हैं। फिल्मी पात्रों के डायलागों पर मनचले कमेंट्स कसना शुरू कर देते हैं और प्रायः यह कमेंट्स इतने अच्छे होते हैं कि आस-पास बैठे दर्शक खिला-खिला कर हंस पड़ते हैं। बोरियत एक ही झटके में दूर हो जाती है। हम इस फीचर में फिल्मों के ऐसे ही कुछ दृश्य तथा संवाद दिखा रहे हैं और दर्शकों की गुदगुदाने वाली फिकरेबाजी। अगली बार आप भी इन कमेंट्स, तुक्कों व फिकरेकशी का प्रयोग कर आस-पास बैठे दूसरे दर्शकों का मनोरंजन कर सकते हैं।




लाला, जी, काश तुम आज जिन्दा होते···
तो सबसे पहले तो तुम लोगों को बीमे में मिली रकम वापिस लौटानी पड़ती ।
EXIT
रजनी, मुझे भूल जाना । समझ लेना हमारा प्यार एक सपना था ! मैं आज ही यहां से दूर बहुत दूर चला जाऊंगा !
बड़े भाई कल चले जाना । आज टैक्सी और स्कूटर वालों की हड़ताल है ।
जब तुम पास होती हो तो मुझे किसी चीज की सुध नहीं रहती ।
रमेश, तुम्हारे साथ समय कैसे गुजर जाता है पता ही नहीं लगता ।
बेटा यह बालों में क्लोरोफार्म मल कर आती ।
हमारा भी कुछ ख्याल करो मैडम ! हम तो बोर हो रहे हैं ।
भगवान, मैंने आज तक तुझसे कभी कुछ नहीं मांगा है···
तो फिर अब लेट फीस देनी पड़ेगी ।
पहले राशन कार्ड ला कर दिखाओ ताकि पता लगे कि तुमने अब तक सचमुच कुछ मांगा है या नहीं ।
EXIT

कवियों के फेरे में

—प्रमोद कुमार अग्रवाल



मैं अब भी यही सोच रहा था कि या तो इस बुड्ढे सम्पादक ने कुछ पी रक्खी है या इस समय इसके दिमाग का कोई पेंच ढीला हो गया है या मैं ही कोई सपना देख रहा हूं जब सामने कुर्सी पर डटे, सम्पादक जी ने मुझसे कहा, 'भई, आपकी यह रचना हमें बहुत पसन्द आई है और हम इसे शीघ्र ही अपनी पत्रिका में प्रकाशित करेंगे।' तो मुझे लगा मेरी किस्मत के सितारे एकदम से चमक उठे हैं या हो सकता है कि यह नये वर्ष का ही चमत्कार हो। मेरी खुशी का कोई ठिकाना न था। मुझे ऐसा लग रहा था कि जैसे मैं कुर्सी सहित आकाश में विचरण कर रहा हूं। पिछले कई वर्षों से जिस स्वप्न के लिए मैं जी तोड़ कोशिश कर रहा था, वह आज कैसे साकार हो उठा।

अचानक मुझे, आसमान से जमीन पर उतारा एक वृद्ध महिला की आवाज ने, 'भाई साहब, मैंने भी अभी-अभी आपकी रचना पढ़ी, मुझे नहीं मालूम था, इस शहर में आप जैसे नवयुवक लेखक भी हैं।' मेरी तो जैसे बोलती बन्द हो गई।

'आप हमारे यहां आइये। हर सप्ताह, हम लोग एक कवि-गोष्ठी रखते हैं। आपका और कवियों से भी परिचय हो जाएगा।' महिला ने कहा, जो कि शक्ल से ही कोई पहुंची हुई कवियत्री लगती थीं।

'जी…यह तो मेरा सौभाग्य होगा' मैंने कहा, और उन लोगों से विदा लेकर कार्यालय के बाहर आ गया। मेरी अन्तरात्मा, मुझ से बार-बार कह रही थी, लगता है आज तो किस्मत के सारे दरवाजे खुल गये। क्या हुआ, अगर पिछले दस वर्षों में दस बोतल स्याही और बीस सौ कागज के पन्नों को रद्दी की टोकरी का मुंह देखना पड़ा। किसी तरीके से, वापस कमरे में पहुंच कर, अपनी टूटी-फूटी चारपाई में जाकर धंस गया। आज तो चिथड़ा दरी पर भी मुझे, छः इंची गद्दे का सुख मिल रहा था। अब पता लगेगा, इन दुनिया वालों को कि मैं बिन-वजह ही नहीं चार साल से एक ही क्लास में झूल रहा हूं।

बहुत इन्तजार करने के बाद, आज वह दिन आ ही गया जबकि मुझे जिन्दगी में पहली बार कवि-गोष्ठी में बैठने का सौभाग्य प्राप्त होने वाला था। सवेरे से ही मैं सजने-धजने की तैयारी में लग गया। अभी कपड़े ही पहने थे कि मेरी नजर अपने फटे जूतों पर पड़ी, तीन-चार पैंदे तो खैर लग ही चुके थे लेकिन अब वह, आगे से अपना मुंह बाए पड़ा था। सत्यानाश हो इसका। सारी जेबें टटोलने पर सिर्फ साठ पैसे जुटा पाया।

कल्लू मोची ने जब फिर से उन जूतों को देखा तो बत्तीस कोने का मुंह बना दिया। एक बार तो मैं भी सहम गया, कहीं बनाने से इन्कार न कर दे। कभी मेरी तरफ तो कभी जूतों की ओर देखकर, उसने अपने तीन-बचे खुचे दांतों वाला मुंह खोला, 'साहब, मेरी मानिए तो आप इन जूतों को इस बार नुमाइश में रखवा दीजिए। मैं दावे के साथ कह सकता हूं, अगर इससे ज्यादा खस्ता जूता कोई लाकर रख देगा तो जिन्दगी भर के लिए अपना धन्धा छोड़ दूंगा।' मेरे पूरे तन-बदन में आग लग गई, पर मरता क्या न करता, किसी तरह उसको मनाकर, काम करवाया।

निश्चित समय से पहले ही मैं अपनी सत्तावन मॉडल साइकिल हांकते हुए, गोष्ठी वाले स्थान पर पहुंच गया। आस-पास कोई व्यक्ति नहीं नजर आ रहा था। तभी पता नहीं किस कोने से उस महिला का आगमन हुआ। 'ओह ! आप आ गये। बहुत अच्छा किया। चलिए हम लोग बैठते हैं, धीरे-धीरे सभी लोग आ जायेंगे।'

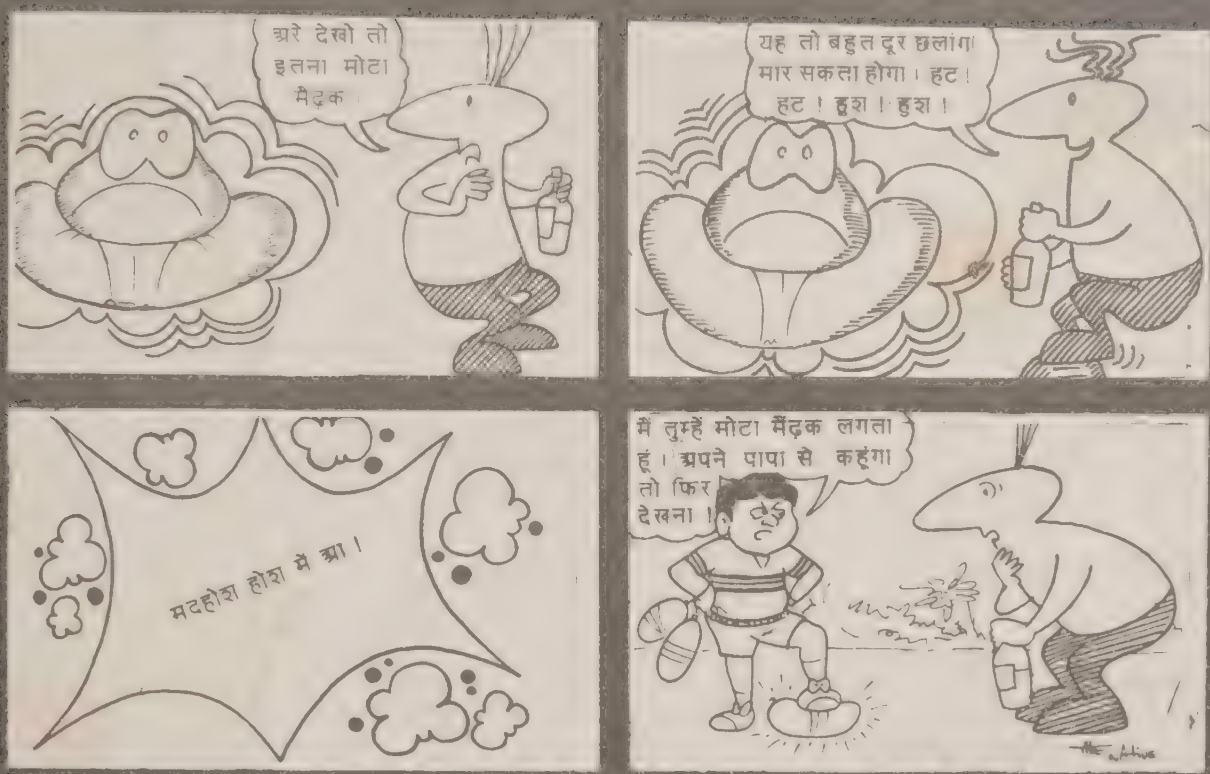
'चलिए,' मैंने सीना फुला कर कहा। वैसे मेरी कसी कमीज थोड़ा सा चरमरा जरूर गई थी किन्तु सौभाग्यवश कोट ऊपर था। अभी हम लोगों को बैठे कुछ ही देर हुई थी कि एक अधेड़ आयु के व्यक्ति का प्रवेश हुआ। बदन पर बाबा आदम के जमाने की धोती व कुर्ता, कंधे पर एक दुशाला झूलता हुआ, जो कि अवश्य ही कहीं से पार किया हुआ था, सिर पर बाल कुछ ऐसे बिखरे हुए जैसे अभी-अभी इस पर छात्र-पुलिस संघर्ष हुआ हो। वह महोदय, धीरे-धीरे छड़ी लिए हुए हमारी तरफ बढ़ रहे थे। मैंने धीरे से कवियत्री जी से पूछा, 'यह कौन साहब हैं ? कहीं गलती से तो इधर नहीं आ गये।'

कवियत्री जी ने आंखें फाड़ कर मुझसे कहा, 'इन्हें नहीं जानते, यह हैं महान कवि जगधर प्रसाद 'अकेला'।'

'अच्छा-अच्छा, आप ही हैं अकेला जी,' मैंने उत्सुकता प्रकट करते हुए कहा, हालांकि यह नाम मैंने जिन्दगी में पहली बार सुना था। उनसे मेरा परिचय कराया गया। धीरे-धीरे, आठ-दस कवियों का जमघट जमा हो गया। गोष्ठी प्रारम्भ हुई। एक कवि जी ने धीरे से अपनी चोंच खोली और इतनी जटिल हिन्दी में कुछ कहा कि मेरा तो सर चकरा गया। अभी मैं उस मरियल से कवि को घूर रहा था कि सब के सब वाह-वाह करने लगे। हे भगवान ! यह कैसी कविता है !

अब दूसरे कवि की बारी थी। उन्होंने

मदहोश



जो कुछ सुनाया, समझ में तो आया पर उसे कविता कैसे कहा जाए यह नहीं समझ में आया ।

थोड़ा सा मेरा भी हौसला बढ़ा, अगर यही कविताओं का रूप है, तब मैं तो इन लोगों को इतनी सुना सकता हूं कि या तो यह सब ढेर हो जायेंगे या मैं ही । 'वाह-वाह' की गूंज बार-बार मेरे कानों का पर्दा फाड़ने पर तुली थी । तभी मेरे बगल में बैठे हुए कवि ने मुझसे धीरे से पूछा, 'बेटा, धूम्रपान तो करते ही होंगे ।'

'जी···कभी-कभी,' मैंने हिचकिचा कर कहा । 'क्या बताऊँ, आज मैं दूसरा कुर्ता पहन आया हूं, जरा एक सिगरेट तो पिलाओ ।' मैंने सोचा, आज तक मैंने खुद तो सिगरेट खरीद कर पी नहीं और यहां मेरे ही ऊपर जाल फेंका जा रहा है ।

'महोदय, इस समय मेरी जेब में तो है नहीं,' मैंने उत्तर दिया । उन्होंने मुँह मिकोड़ कर देखा फिर कहा, 'बेटा, कवि बनने के लिए, सबसे पहले कुछ ऐसे काम करने पड़ते हैं, जिससे तुम तन-मन से सिर्फ एक ही वस्तु के बारे में सोच सको ।' मैंने मन में कहा जिन्दगी भर यही तो करता रहा हूं, वरना आज आप जैसे चांडालों के बीच न फंसता ।

अचानक दूसरे साहब, जो कि शायद हमारी बातें सुन रहे थे, बोल पड़े, 'बेटा, नुक्कड़ वाली पान की दुकान पर मिल जाएगी···।'

अभी कुछ और कहते, इससे पहले ही मैं उठकर खड़ा हो गया । उन्हें आश्वासन देकर, जब मैं बाहर आया तो जान आई । अगर अब दुबारा वापस गया तो यह लोग मेरे कपड़े भी उतरवा लेंगे । भगवान बचाए ऐसे कवियों से । मैंने अपने आप से कहा, 'बेटा ! छोड़ दे यह कवियों का चक्कर । अभी तो लेटने को टूटी खाट व चिथड़ा दरी है, वरना फिर तो जमीन पर भी लेटने को जगह न मिलेगी ।'

कई दिन बीत गये, कलम को कागज पर इस्तेमाल किए हुए, पर लिखने बैठते ही, जब उस गोष्ठी का ख्याल आता है तो मुंह ढंक कर सो जाता हूँ । ●

परिणाम

अंक ४२ में प्रकाशित वर्ग पहेली का हल

अ	नं	त	ना	ग
म	ग	न		री
री	ल		क	ब
का		ब	ल	मा
	शा	ली	मा	र

विजेता :—
जुगनू - विक्की
7914, लेबर कॉलोनी
कानपुर -208006

अंक ४२ में प्रकाशित तुकबन्दी का हल

खेल हो रहा था मनमाना
अंपायर को पड़ा समझाना
बल्लेबाज भी था मस्ताना
बैट छोड़, फैंक मारा दस्ताना ।

विजेता :— विजय कुमार भाटिया
कनखल हरिद्वार (यू॰ पी॰)

अंक ४३ में प्रकाशित गुमनाम का हल

कलाकार का नाम सुजीत कुमार

दीवानी बात :- आशा- जैसे तूने मुझे ऊपर उठाया है भगवान तुझे भी जल्दी ऊपर उठा ले ।

विजेता : संदीप कुमार, नई दिल्ली

आपस की बातें

चचा वातूनी की कलम दवात से

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

वजीर आलम—सागर : आप अपनी सूरत आईने में देख कर क्या सोचते हैं ?

उ० : पहले कुछ सुन्दर मुखड़ों के बारे में सोचते हैं, फिर अपने बारे में और कहते हैं :

इलाही कैसी-कैसी सूरतें तू ने
बनाई हैं,
कि हर सूरत कलेजे से लगा
लेने के काबिल है।
हमें जो देखता, कहता, कलेजा
मुंह को आता है,
कचालू जैसी यह सूरत भगा देने
के काबिल है।

भाई अमर कुकार—नेपाल : आप मेरे प्रश्नों के उत्तर नहीं देते, कृपया बताइये आप का जन्म दिन कब है ? ताकि मैं अपने प्रश्नों के उत्तर पाने के लिए उपहार की शक्ल में आपको घूंस दे सकूं ?

उ० : हमें खुद पता नहीं, अपना जन्म दिन पता लगाने के लिये तो हम जान भी देने को तैयार हैं। पर छोड़िये साहब इस झमेले को, आप नेपाल में हमारे दीवानों की सख्या बढ़ाइये और चटपटे प्रश्न भेजिये। हमारे लिये यही सब से बढ़ी घूंस है।

रोशन व्यास त्यागी—इन्दौर : चाचा जी, लव-मैरिज कब करनी चाहिए ? ठंड में या गर्मी में ?

उ० : कभी भी कर लीजिये। ठण्डे तो आप फिर भी पड़ जायेंगे।

मुहम्मद जुबैन—फरीदी : यह जानते हुए भी कि अपराध करने पर सजा मिलेगी, मनुष्य अपराध क्यों करता है ?

उ० : क्योंकि आज के युग में कई बार अपराध न करने पर भी सजा मिल जाती है और कई बार अपराध करने पर भी नहीं मिलती। क्या आपने सुना नहीं, किसी कवि ने कहा है :

ले के रिश्वत फंस गया है,
दे के रिश्वत छूट जा।

चन्द्रभान 'अनाड़ी'—जबलपुर : कौन से रंग में जिया जाए कि मरने का गम न रहे ?

उ० : गिरगिट के से बदलते रंग में। देख लीजिये, जो टिमाटर पहले कांग्रेस के टोकरे में बदरंग और बेरंग पड़े थे। वे कैसे-कैसे लाल और गुलाबी बनकर जनता पार्टी के टोकरे में सजे हुए हैं और हमारी यह बात पत्थर की लकीर समझिये कि इस रंग में जीने वालों के मरने पर किसी को गम नहीं होगा।

योगेश कुमार अग्रवाल—डीमापुर : चाचा जी, आप जीने के लिये खाते हैं या खाने के लिए जीते हैं ?

उ० : जीने के लिये खाते हैं। पर क्या खाते हैं ? अपने दीवाने चाचा के बारे में यह पता है आपको ?

खूने दिल पीने को और लख्ते जिगर खाने
को,
ये गिजा मिलती है लैला तेरे दीवाने को।

नारायण वाधवानी—रायपुर : प्यारे अंकल सुना है आप इन्दिरा गांधी के मुकाबले पर चुनाव में खड़े हो रहे थे। उस योजना का क्या बना ?

उ० : जनता पार्टी के सूरमाओं को चित होता देखकर हमने समझ लिया कि ऐसे चुनाव में 'खड़े' होने से 'पड़े' रहना ज्यादा इज्जत की बात है।



प्रीतम सिंह—आगरा कैंट : नये साल के लिए आपने कौन-सी कसम खाई है ?

उ० : यह कसम खाई है कि हम ऐसी कोशिश करेंगे कि नया साल हमें न खा जाये।

रामप्रताप सिंह—अलवर : परिवार नियोजन के बारे में आपकी नीति क्या है ?

उ० : देश में दीवानों की संख्या अधिक से अधिक बढ़ाइये। इसके लिए हमारा नारा है : एक करोड़ या दो करोड़ और तीसरे करोड़ के बाद भी बस नहीं।

केवल प्रकाश दुआ—काशीपुर : अचानक मौत को सामने देखकर इन्सान क्या सोचता है ?

उ० : औरों का पता नहीं। हमारे सामने मौत आ जाए तो हम सोचेंगे, जिन्दगी ने तो कुछ दिया नहीं। अब मौत आई है तो इस से एक बोतल मिट्टी का तेल ही मांग लो।

सुधीश उर्फ टिपल्लू—बहजोई : चाचा जी, क्या यह सत्य है कि सन् २००० में दुनिया समाप्त हो जाएगी ?

उ० : जी नहीं, लगता है यह गप किसी हाई क्वालिटी के दीवाने ने उड़ाई है।

मनोज दीक्षित—इन्दौर : चाचा जी, क्या आपने कभी कोई बुरा काम किया है ?

उ० : एक ही बुरा काम किया है कि उम्र भर कोई अच्छा काम न कर सके।

विमला रानी—ईगल स्ट्रीट, लेमिंघटन, इंग्लैंड : मैं करीब एक वर्ष से इंग्लैंड में रह रही हूं। इंग्लैंड में दीवाना पाकर मुझे अपने प्यारे देश भारत की बहुत याद आती है। दीवाना का हर फीचर पढ़कर दिल झूम उठता है। दीवाना सचमुच हास्य-मनोरंजन की सर्व श्रेष्ठ हिन्दी पत्रिका है। क्या आप ऐसा प्रबन्ध कर सकते हैं कि चन्दा लेकर आप मुझे सीधे भारत से यहाँ इंग्लैंड में दीवाना भेजने का प्रबन्ध कर सकें ?

उ० : प्रशंसा के लिए धन्यवाद, वैसे हम चाहते हैं कि केवल प्रशंसा की बजाए हमारे पाठक समय-समय पर यह भी बतायें कि दीवाना में किस स्थान पर दीवानगी की कमी रही। भारत से इंग्लैंड के लिए सीधे दीवाना मंगवाने के लिए आप वार्षिक चन्दा भेज दीजिये दीवाना आपको हर सप्ताह वहीं मिलता रहेगा।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

तर्क कुतर्क

तुम कितने अच्छे हो ।

कुतर्क—मीट्रिक प्रणाली में या सेर-मन में ?

नींद आ रही है ।

कुतर्क—उसे लेने स्टेशन जाओगे ?

आजकल मेरा दिल नहीं लग रहा है कहीं—

कुतर्क—बगैर सिफारिश के आजकल कहीं कोई लग सकता है ?

आपका शुभ नाम ?

कुतर्क—शुभ व अशुभ दोनों अवसरों के लिए एक ही नाम है मेरा ।

आज सर्दी है ?

कुतर्क—कैलेंडर में तो आज सोमवार लिखा है ।

आप किस पार्टी के समर्थक हैं ?

कुतर्क—किस करने वालों ने अलग पार्टी बना ली है ?

जरा देखो मेरे सैंडल मैच करते हैं ?

कुतर्क—हां, बकरी के खुरों से ।

चाय का पानी चढ़ा दो ?

कुतर्क—किस गाड़ी पर ?

चाय पीयेंगे आप ?

कुतर्क—नहीं, मैं उसे चन्दन के तेल की तरह सारे जिस्म पर रगड़ूंगा ?

हमारा देश खतरे में है ?

कुतर्क—नहीं, हमारा देश एशिया में है।

आजकल आप दिखाई ही नहीं देते ?

कुतर्क—मैं अदृश्य होने की दवा खाकर आपके पास से गुजर जाता हूं ।

आपकी तारीफ ?

कुतर्क—जितनी भी की जाये कम है ।

आप कहां काम करते हैं।

कुतर्क—जहां काम करने के अलावा और कोई चारा नहीं ।

मेरी घड़ी बंद है ।

कुतर्क—तो खोल लो ?

मेरी सिगरेट लगा दीजिए

कुतर्क—कहाँ लगाऊँ ? सरकारी नौकरी में या प्राइवेट कम्पनी में ?

(आप भी इसी प्रकार के तर्क-कुतर्क सोच कर हमें लिख भेजिये ! आपका तर्क-कुतर्क आपके नाम के साथ इसी कालम में प्रकाशित होगा) ।

पृष्ठ १३ से आगे

सुशील ने यह नहीं पूछा कि वह कहाँ है। वह किसी और सोच में डूब गया।

रात को जब वह सोने के लिए लेटा तो बहुत खुश था। जिन्दगी में अपने लिए आरजू ही क्या थी—बस—मधु—और उसे विश्वास था कि बहुत जल्द मधु उसकी हो जाएगी।

लेकिन मस्तिष्क में एक चिन्ता थी रंजन के लिए। उसे रंजन कुछ उलझा-उलझा सा दिखाई दे रहा था। उसने पूछने पर भी कुछ न बताया था।

बहुत पूछने पर बोला था—

'आजकल गाँव की हालत अच्छी नहीं है।'

सुशील यही सब सोचता रहा। रात बीत गई।

और दूर कहीं घड़ियाल के घण्टे बज उठे।

'टन···टन···टन···!'

टन···टन···

घण्टा दो बार बजा।

सुशील चौंक पड़ा। उसे हंसी आ गई। मौत कितनी निकट आ गई थी। केवल तीन घण्टे रह गये थे। और इतनी देर में उसके सिर पर से एक भयानक लहर गुजर रही थी। घटनाओं की लहरें उसे वहाँ ले आई थीं। अतीत के राजपथ पर खड़ा वह चेहरे देख रहा था, धूल से उठते हुए चेहरे—घटनाएं, जो नंगे सिर, नंगे पैर समय के रास्ते पर चली जा रही थीं।

मधु, तुम आज कितनी याद आ रही हो। हालांकि यह बात ठीक नहीं है। आज ही क्यों, उस दिन को याद करो जब पहली बार तुम्हारी नजरें उठी थीं। और मैं तुम्हें देख रहा था। फिर तुम और हम दोनों की नजरें टकराई थीं। तुम मुस्करा दी थीं। उस दिन तुम कितनी अच्छी लग रही थीं। बस उसी दिन से मैंने अपने दिल की दीवारों को तुम्हारी यादों की तस्वीरों से सजाया था। आज याद का दर्द ज्यादा है। वरना याद तो हमेशा···पता नहीं, तुम्हारे दिल में मेरे लिए जगह कब बनी? शायद उस दिन—जब मुझे बुखार था और मैं तुम्हें याद कर रहा था, लेकिन तुम्हारा प्यार कितना स्थायी है। इसमें रत्ती-भर भी सन्देह नहीं है। तुमने सीमा के बारे में कभी कुछ नहीं पूछा। उस लड़की के बारे में भी नहीं पूछा जिसकी कहानी मैंने तुम्हे सुनाई थी। सुनकर तुम हंसने लगी थीं।

आज तुम्हारी याद के फूल महक रहे हैं। आज इस दर्द के पास से फिर ठंडी हवा गुजर रही है। एक कसक-सी है—एक टीस और जलन-सी है।—जी चाहता है तुम मिल जाओ। मेरे सामने उसी तरह बैठी रहो—जैसे बैठी रहा करती थीं। सिर से जरा दुपट्टा खिसक गया। बालों की एक लट तुम्हारे सुन्दर कानों को चूम रही है। मधु, तुम सुनोगी तो हँसोगी—मुझे तुम्हारे कान बहुत सुन्दर लगते हैं। फानूस की तरह झिलमिलाते हुए। इन्द्रधनुष की तरह सुर्ख! तुम्हारे होंठों पर हल्की-सी मुस्कराहट है—तुम्हारा चेहरा हाथों में लेकर उसे देखता रहूं। फिर मेरे होंठ धीरे-धीरे बढ़े। तुम्हारे अखरोटी बालों के बीच से निकलती हुई मांग को चूमते हुए तुम्हारे माथे पर प्यार का झूमर सजाते हुए। तुम्हारे होंठों पर पहुंचकर रुक जाएं। आज तुम्हें बहुत प्यार करने को जी चाह रहा है मधु!

अगर दिल देखा जा सकता! अगर प्यार तोला जा सकता। अगर प्यार की आवाज सुनी जा सकती तो मधु! हर जगह तुम हो—बस तुम्हीं हो—मैं तुम्हें कितना चाहता हूँ? काश तुम्हें बता पाता। तुम्हें कितना चाहता हूं काश तुम्हें बता पाता? तुम्हें कैसे बताऊँ? कितनी दीवारें तोड़ सकता हूं। किस-किस से विद्रोह कर सकता हूँ।—मुझे तुम्हारी सूरत बहुत अच्छी लगती है। बहुत प्यारी लगती है।—तुम्हारी मुस्कराहटों के चिराग जल उठते थे तो संसार प्रकाशित हो उठता था। लेकिन मैं तुम्हें इसलिए नहीं चाहता था कि तुम्हारी सूरत अच्छी है। अच्छी सूरत तो बिगड़ जाती है। हर सुन्दरता का अन्त कुरुपता में होना है। चाहे दस वर्ष बाद या पचास वर्ष बाद—मुझे तुम्हारा दिल रोशनी से भरा लगा था मधु!

और तुम यह पूछोगी—इस समय जब कि रात के दो बजे हैं और तुम रंजन भाई के साथ सुहागरात मना रही होगी। मगर तुम्हारी और रंजन भाई की जबान पर मेरी ही चर्चा होगी और तुम सोच रही होगी कि जब मैं तुम्हें इतना चाहता था तो मैंने तुम्हारी इतनी बड़ी परीक्षा क्यों ली?

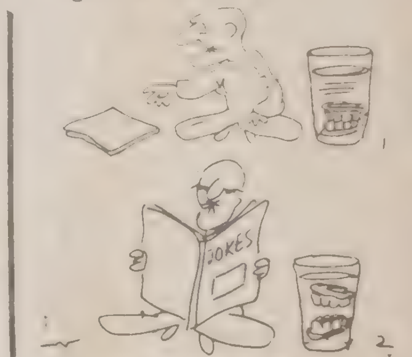
सोचते-सोचते सुशील ने फोटो नजरों के सामने कर लिया। एक बार हवाएँ फिर उसे अपने कंधे पर बैठाकर अतीत के धुन्धलकों में ले गयीं और वह चारों ओर श[...] नाइयों की गूंज में घिर गया।

शहनाइयाँ बज रही थीं।

सुशील, शायद रंजन से भी अधि[...] खुश था।

बारात आई। भाँवरें पड़ीं। सीम[...] विदा होकर ससुराल चली गई।

सुशील ने रंजन से कहा—



'मैं कल शहर जाना चाहता हूं।'

'जाओ!'

'रंजन भाई, कल्पना को भाभी कहक[...] पुकारने को जी चाहता है।'

'यह क्यों नहीं कहते कि इसके बा[...] अपना नम्बर लगाना चाहते हो।' रंजन हं[...] पड़ा, 'मेरा विचार है मधु को बी० ए० क[...] लेने दो। थोड़े ही दिन तो रह गये।'

सुशील चुप हो गया।

दूसरे दिन वह शहर चला गया।

इस बार शहर जाने के बाद वह ह[...] हफ्ते घर आता रहा।

एक दिन—

वह शाम को पहुंचा था। रंजन घ[...] पर नहीं मिला। मालूम हुआ दो दिन पह[...] दिल्ली गया है और लगभग एक सप्ताह [...] लौटेगा।

(क्रमशः)



अगले सप्ताह एक और लाजवाब सवाल ?

26 जनवरी

तीन वरदानों वाली—**यह पावन वर्षगांठ**

आज के दिन, 49 वर्ष पहले, हमने पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करने का संकल्प लिया ।

आज के ही दिन, 1950 में, हमने भारत को एक गणराज्य घोषित किया और अपने लिए एक संविधान स्वीकार किया जिसमें न्याय, स्वतंत्रता, समता और बन्धुता के आदर्शों को शामिल किया गया ।

दो वर्ष पहले, लगभग इसी समय, हमने संविधान द्वारा गारंटी किए गए लोकतंत्र के रास्ते पर अपनी यात्रा फिर से प्रारम्भ की ।

इस पावन वर्षगांठ के शुभ अवसर पर—

आइए ! हम सब अपनी स्वतंत्रता फिर से कायम करने के लिए भारत की जनता को धन्यवाद दें ।

आइए ! हम उन लोगों के सपनों को साकार करने का प्रयत्न करें, जिन्होंने स्वतंत्रता और समानता के लिए अपने प्राणों की आहुति दी ।

आइए ! हम सब पुनः संकल्प करें कि सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय प्राप्त करने के लिए तेजी से प्रयत्न करेंगे ।

davp 78/419









…, डी. एम. ई. … भोईयों की …ला उदयपुर … वर्ष, मित्रता …सुनना।

सुधीर मलहोत्रा, रन्यू केन्ट रोड, १८ वर्ष, जासूसी करना, किताबें पढ़ना, दोस्ती करना, पान खाना, रोजाना नए नए कपड़ा पहनना।

धीरेन्द्र कुमार सोमानी, स्कीम नम्बर २, नई आबादी मंदसौर (म० प्र०), १६ वर्ष, फर्माइश भेजना, रेडियो सुनना, पढ़ना।

हरीशकुमार भाटिया (सचिव), यूथ पैन पाल्स क्लब, ११/८ गांधी कालोनी, मु० नगर (यू० पी०), १६ वर्ष, युवकों से पत्र-मित्रता करना।

श्याम लाल, मकान नम्बर २६५३, राम गली, तेली वाड़ा दिल्ली, २० वर्ष, झूठ बोलना, किसी का काम न करना, खुश रहना।

रामकिशन, डी० १७/१, नारायणा बिहार, १६ वर्ष, कहानी लिखना, कार चलाना, सैर करना, बड़ों का आदर करना।

रविन्द्रपाल सिंह बट्टर, डब्ल्यू० जेड० १६, मीनाक्षी गार्डन, न्यू दिल्ली, १५ वर्ष, पतंग उड़ाना, तैरना, दीवाना पढ़ना तथा घूमना।









…दी), अशोक- … १७ वर्ष, …त्रता करना, …घूमना-फिरना,

आनन्द गुप्ता द्वारा विपिन गुप्ता, २७६ अमृतपुरी, प्रताप नगर, दिल्ली, १६ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, साप्ताहिक पत्रिकायें पढ़ना।

राजीव कुमार, मकान नम्बर ५६०, भीम नगर, गुड़गांवा, १६ वर्ष, पढ़ना, फिल्म देखना, बच्चों से अधिक प्यार करना और खेलना।

यशवीर सिंह द्वारा नन्द क्लब, नगला भम्मन, पो० टुण्डला (आगरा), १६ वर्ष, कहानी लिखना, क्रिकेट खेलना, दौड़ लगाना।

अनिल कुमार शर्मा, ३४०/११ चौक शिब्बू मल खन्ना (पंजाब), २१ वर्ष, कहानी लिखना, पत्र-व्यवहार करना, समाज सेवा करना।

जवाहर लाल पुरी, रामानन्द मकान नम्बर १३४०, जालन्धर केन्ट, १८ वर्ष, पुस्तक पढ़ना, पत्र-मित्रता करना।

सुशील कुमार श्रेष्ठ, १/५११ थापाथली काठमाण्डू, नेपाल, १७ वर्ष, पत्र-व्यवहार करना, ड्राइंग करना, पढ़ना, हंसना-हंसाना।









…, गंगा बिशन …नजदीक पुलिस …वर्ष, पढ़ना, …भ्रमण करना, …करना।

तिलकराज अरोड़ा, १०६, रवेश ज्ञान खुर्जा (उ० प्र०), १८ वर्ष, रेडियो सुनना, फिल्में देखना, फर्माइश भेजना, पत्र-मित्रता करना।

राणा जुनेजा, मकान नम्बर २ स १२, सेक्टर नम्बर ११, माधव्ना मथरा, उदयपुर (राज०), १६ वर्ष, पिक्चर देखना।

संतोष कुमार शुक्ला, भारसुगुडा उड़ीसा), १६ वर्ष, क्रिकेट खेलना, पत्र-मित्रता करना, पढ़ना, बड़ों से अच्छी नसीहत सीखना।

विपिन कुमार अरोरा, कुबेर आयरन स्टोर, नई मण्डी, मु० नगर, १५ वर्ष, फिल्म देखना, टी० वी० पर प्रोग्राम सुनना व पढ़ना।

नरेन्द्र अग्रवाल (मनु), २०२ पाटली पुत्रा कालोनी, पटना (बिहार), १५ वर्ष, दोहा लिखना, गुण्डा-गर्दी करना, लड़ाई करना।

सुनील जैन, पुरानी अनाज मण्डी, रोहतक, १४ वर्ष हवाई जहाज में यात्रा करना, पतंग उड़ाना, जानवरों से प्यार करना।









…सिंह, क्वाटर …नम्बर १२, …ट एसीको, …र), १७ वर्ष,

विनोद कुमार सिंह, मनिरामपुर, ब्यैरकपुर, २४ परगना पश्चिमी बंगाल), २८ वर्ष, फिल्में देखना, फिल्मी पत्रिकायें पढ़ना।

विनय कुमार एलींहेंस, एस० ७७/५८४, सत्य प्रेमी नगर, बाराबंकी, १७ वर्ष, फिल्म देखना, क्रिकेट खेलना, डाक टिकट संग्रह करना।

प्रकाश चन्द्र माथुर, पुत्र श्री शिवराज माथुर, राजस्थान राज्य-विद्युत मण्डल-डीडवाना, १८ वर्ष, हर काम को सीखना।

सुखवन्त सिंह, मकान नम्बर सी०/७४, एन० आई० टी० फरीदाबाद, १६ वर्ष, मोटर साईकिल चलाना, दादागीरी करना।

विकी सहानी 'पत्रकार', एम० बिल्डिंग, ४० मार्तण्ड चौक, इन्दौर, २० वर्ष, पत्रकारिता, तैराकी, फर्माइश भेजना।

अवध किशोर चौधरी, अनदी भवन, काशीपुर चौक, समस्तीपुर, १७ वर्ष, विदेशी रेडियो श्रोता क्लबों के सदस्य बनना, घूमना।







…३२३, नेहरू …(उ० प्र०), …कायें पढ़ना, …अच्छी शिक्षा …।

इंद्रपाल सिंह सिसोदिया, पोखरायां कानपुर १६ वर्ष, दीवाना बनना, पिक्चर देखना, नये दोस्त बनाना और दोस्ती निभाना।

रमाकांत टांटिया पुत्र श्री श्रीपत राय टांटिया, ५२६, विनोबा बस्ती, श्री गंगानगर (राज०), १७ वर्ष, डाक-टिकट संग्रह।

कृष्ण कुमार सुखी, २४८३/६, ग० गली नम्बर २०, रजगढ़ देहली, १७ वर्ष, पिक्चर देखना, रेडियो पर गाने सुनना

रमेश कुमार नारंग, डी० ए० ६५२, मंडी घसीटा, सोनीपत, १८ वर्ष, पढ़ना, बोलचाल न रखना, नई पिक्चर देखना व पढ़ना।

…ाना फ्रेंड्स क्लब

दीवाना फ्रेंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रेंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पता : दीवाना फ्रेंड्स क्लब
८-ब बहादुरशाह जफर मार्ग नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।
नाम ________
पता ________
आयु ________ शौक ________

…जर, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

सा... [illegible]

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी

सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

२५ जनवरी से ३१ जनवरी ७६ तक

मेष : विशेष परिश्रम से लाभ होगा, चालू काम-धन्धों में लाभ मिलेगा, सेहत में गिरावट या शरीर में कमजोरी का प्रभाव रहेगा, भ्रातृ सुख अच्छा मिलेगा, दुश्मन आपका लोहा मानेंगे।

वृष : भाग्य सहारा देगा, पुरुषार्थ शक्ति द्वारा धन लाभ होगा, और मान प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी, धार्मिक कामों में रुचि बनेगी, मित्रों से सहयोग, सेहत को सम्भालें अन्यथा बिगड़ सकती है।

मिथुन : व्यवसाय में सुधार और लाभ भी पहले से अच्छा होने लगेगा, व्यय की अधिकता से परेशानी परन्तु आर्थिक स्थिति पूर्णतः आपके काबू में रहेगी, परिश्रम से बिगड़े काम बन सकेंगे।

कर्क : मनोरंजक कार्यक्रमों पर व्यय एवं प्रसन्नता का वातावरण भी बनेगा, कारोबार बढ़ेगा और लाभ पहले जैसा ही होता रहेगा, राजपक्ष में भय या परेशानी, नए कामों में सफलता मिलेगी।

सिंह : राज कार्यों में ज्यादा दौड़धूप करने पर सफलता मिल सकेगी, भाइयों से सहयोग कम मिलेगा, स्थाई साधनों से धन लाभ होता रहेगा, मित्र आपके हाथ मजबूत करेंगे, हिस्सेदारों से झगड़ा होगा।

कन्या : साहस न छोड़ें, धैर्य एवं परिश्रम से काम करते रहें सफलता भी मिल जायेगी, काम-धन्धा व रोजी रोजगार में सुधार परन्तु आर्थिक लाभ देर से मिलेगा, नये कामों में हानि का भय है।

तुला : भूमि, जायदाद और मशीनरी आदि के कामों में सफलता परन्तु परिश्रम भी काफी करना पड़ेगा, काम-धन्धों से लाभ अच्छा, सेहत में अचानक बिगाड़ या चोट लग सकती है।

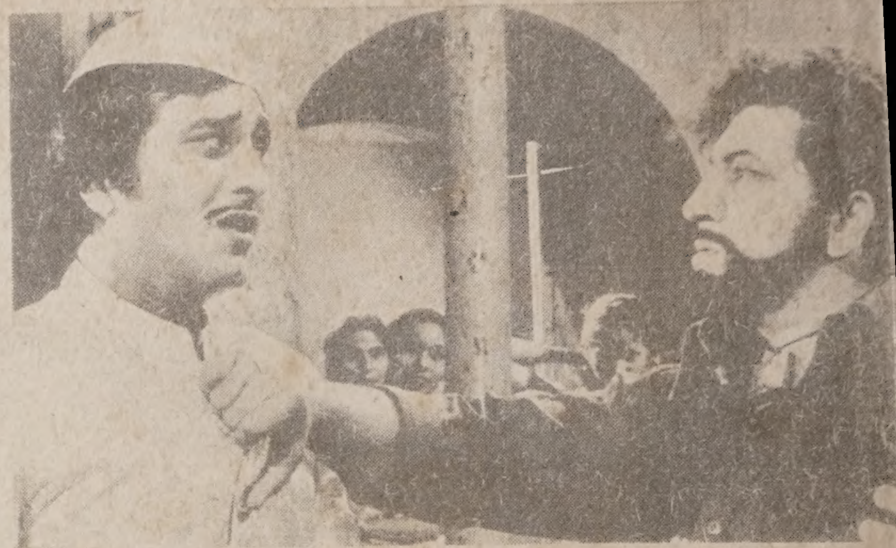
वृश्चिक : समय सतर्कतापूर्वक व्यतीत करें, शत्रु अपनी तरफ से कोई कसर बाकी नहीं छोड़ेंगे परन्तु भाग्य आपका साथ देता रहेगा और आप हानि से बचे रहेंगे, मित्रों के सहयोग से साहस बढ़ेगा।

धनु : यात्रा का विचार अचानक ही बनेगा, मनोरंजन आदि के क्षेत्र में व्यय एवं समय भी अच्छा व्यतीत होगा, लाभ के चान्स बनते रहेंगे, स्थाई साधनों में सुधार करेंगे, कामकाज में व्यस्तता बढ़ेगी।

मकर : शत्रु पराजित होने पर भी हानि पहुंचाने की कोशिश में रहेंगे, सावधानी से रहना जरूरी है, हिस्सेदारों से झगड़ा, बड़े लोगों का आसरा रहेगा, कारोबार से लाभ अच्छा होगा।

कुम्भ : दौड़धूप अधिक रहेगी और बिगड़े काम भी बनते नजर आयेंगे, शुभ कामों में धन खर्च होगा, काम-धन्धा ठीक चलेगा, रुका हुआ पैसा कोशिश करने पर मिल सकता है।

मीन : कारोबार पहले से अब ठीक चल पड़ेगा, धैर्य, साहस और सूझबूझ से काम करने पर सफलता मिलेगी और रुके हुए काम भी बन सकते हैं, बिगड़े सम्बन्ध फिर से ठीक हो जायेंगे।



● विनोद खन्ना, अमजद खां फिल्म 'सरकारी मेहमान' में

विनोद खन्ना

विजय भारद्वाज

सुनील दत्त ने अपनी फिल्म 'मन का मीत' में अपने भाई सोमदत्त के अतिरिक्त नवोदित विनोद खन्ना और लीना चन्दावरकर को पेश किया था। फिल्म 'मन का मीत' एक सफल फिल्म साबित हुई लेकिन इसके परिणाम जो निकले उनसे सुनीलदत्त का मकसद हल न हो सका। वह अपने भाई सोमदत्त को नायक बनाना चाहते थे लेकिन दर्शकों ने विनोद खन्ना और लीना चन्दावरकर को ही स्वीकारा। और इसी फिल्म से यह दोनों कलाकार प्रसिद्धि प्राप्त कर गये। इनके पास दूसरी फिल्मों के कान्ट्रैक्टों की लाईन लग गई। सोमदत्त के बजाय विनोद खन्ना की सफलताओं के डंके बजने लगे।

फिल्म 'मन का मीत' में विनोद खन्ना ने वास्तव में बढ़िया अभिनय किया था।

आज विनोद खन्ना सफलता की सीढ़ी की ओर अग्रसर हैं हालांकि उन्होंने फिल्मों से सन्यास लेने की भी घोषणा कर दी है। यह सन्यास लेने वाली बात कहां तक जमती है यह तो आने वाला कल ही बतायेगा। यह सच है कि विनोद खन्ना नायक से लेकर खलनायक तक की भूमिकायें बखूबी अदा कर चुके हैं।

इनका जन्म छः अक्तूबर को पेशावर (पाकिस्तान) में हुआ। 'मन का मीत' के बाद 'मेरा गांव मेरा देश', 'पूरब पश्चिम', 'आन मिलो सजना', 'मेरे अपने', 'हाथ की सफाई', 'सौदा', 'खून की कीमत', 'हेरा फेरी', 'शक', 'अमर अकबर एन्थनी', 'परवरिश' आदि कितनी ही फिल्में इनकी ऐसी प्रदर्शित हुई जिनमें इन्होंने प्रभावशाली सशक्त अभिनय किया और दर्शकों के दिलों पर छा गये।

विनोद खन्ना एक ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने खलनायक से अपना फिल्मी जीवन शुरू किया और बाद में नायक बनकर सफलता प्राप्त की। ऐसा बहुत कम देखने को मिलता है।

विनोद खन्ना अपने आम जीवन में बेहद सादा हैं। सदा मुस्कराते रहने वाले विनोद खन्ना जब कुछ विचलित हुये और इन्होंने दिमागी परेशानी महसूस की तो यह आचार्य रजनीश के शिष्य बन गये।

यह घर में पति व पिता की भूमिका भी निभा रहे हैं। पत्नी गीतांजली अपने इनकी तारीफ करती नहीं थकतीं। घर पर कभी फिल्म सम्बन्धी वार्तालाप करते इन्हें नहीं देखा गया। यह बच्चों में घुल मिल जाने वाले स्वभाव के सीधे सादे सन्यासी हैं।

इनकी आने वाली प्रमुख फिल्में हैं। 'नमक हलाल', 'बम्बई ४०५ मील', 'इंसान', 'जेल यात्रा', 'राज महल', 'राजपूत', 'जालिम', 'एक और एक ग्यारह', 'गर्म खून', 'जलियां वाला बाग'

सुमंगल, मालाबार हिल
बम्बई-४००००६